दैनिक
बढ़ता राजस्थान
संस्करण:टोंक,जयपुर, अलवर एवं कोटा

• Since : 2004 /// कदम बढ़ाएं, सच के साथ ///

वर्ष : 12 | अंक : 187 | टोंक | शनिवार,08 मार्च, 2025 | फाल्गुन, शुक्ल पक्ष नवमी संवत्-2081 | भारत सरकार से विज्ञापनों के लिए स्वीकृत | मूल्य :₹ 4.00 | पृष्ठ : 08

www.badhatarajasthan.in badhatarajasthan@yahoo.com badhatarajasthan.dainik badtarajasthan

मौसम जयपुर

31.0° अधिकतम तापमान | 18.0° न्यूनतम तापमान

बाजार शेयर बाजार

सेंसेंक्स | 74,332.58
-7.52 (0.010%)

निफ्टी | 22,552.50
+7.80 (0.035%)

सर्राफा सोना/चांदी

सोना | 88,545 /10g

चांदी | 99,100 /Kg

संक्षिप्त समाचार

एसएमएस स्टेडियम में होंगे अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस पर कार्यक्रम

बढ़ता राजस्थान

जयपुर। राजस्थान राज्य क्रीड़ा परिषद द्वारा शनिवार 8 मार्च को अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष में सवाई मान सिंह स्टेडियम में महिला खिलाड़ियों एवं महिला प्रशिक्षकों के लिये योगा एवं क्रिकेट मैच का आयोजन किया जायेगा। राजस्थान राज्य क्रीड़ा परिषद के सचिव राजेन्द्र सिंह ने बताया कि सुबह 7 बजे से हॉकी सिंथेटिक टर्फ पर योगा का आयोजन किया जायेगा, जिसमें योगाचार्य हेमलता शर्मा द्वारा सभी भाग लेने वाली बालिकाओ और महिलाओं को योगा करवाया जाएगा। इसके बाद सुबह 8 बजे से स्पोर्ट्स कौंसिल क्रिकेट ग्राउंड पर क्रिकेट मैच खेला जायेगा। जिसमें बालिका एकेडमी की खिलाड़ियों के साथ साथ सभी महिला प्रशिक्षक भाग लेंगी। उन्होंने बताया कि उक्त दोनों कार्यक्रम आरयूएफसी द्वारा प्रायोजित किये जा रहे है।

कनाडा-मेक्सिको पर फिर पलटे ट्रम्प, टैरिफ 30 दिन टाला

लोगों ने अमेरिकी टमाटर खाना छोड़ा

वॉशिंगटन (एजेंसी)। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने कनाडा और मेक्सिको पर 25प्रतिशत टैरिफ लगाने के फैसले को एक बार फिर से 30 दिनों के लिए टाल दिया है। ट्रम्प ने 4 मार्च को दोनों देशों पर टैरिफ लगाने का ऐलान किया था। इससे पहले भी ट्रम्प ने कनाडा और मेक्सिको के कई सामानों पर 4 फरवरी से टैरिफ लगाने का ऐलान किया था, लेकिन इसे लागू होने से एक दिन पहले उन्होंने इसे 30 दिनों के लिए टाल दिया था। इस बीच ट्रम्प के कनाडा पर टैरिफ लगाने की धमकी और उसे 51वां राज्य बनाने वाले बयान के बाद देश में अमेरिकी सामानों का बायकॉट शुरू हो गया है। कनाडाई मीडिया के मुताबिक वहां पर लोग अमेरिकी सेब छोड़कर दूसरे देशों के सेब खाने लगे हैं। वहीं, दुकानदार पिज्जा में कैलिफोर्निया के टमाटर की जगह इटली से आए टमाटर का इस्तेमाल करने लगे हैं। कई दुकानदारों ने अपनी दुकानों में अमेरिकी सामान रखना बंद करने की बात कही है।

भाजपा विधायक का सदन में कमेंट, पाकिस्तानी-पकिस्तानी कहा

मान-सम्मान पर चोट पहुंचाने का किसी को अधिकार नहीं : नेता प्रतिपक्ष

बढ़ता राजस्थान

जयपुर। विधानसभा में शुक्रवार को बीजेपी विधायक कालीचरण सराफ ने गोल्फ क्लब को लेकर यूडीएच मंत्री को घेरा। उन्होंने कहा- पिछले सत्र में आपने कहा था कि गोल्फ क्लब को लेकर तीन घोषणाएं की थीं। दिल्ली की तर्ज पर गोल्फ क्लब चलाने की, क्लब की SOG से जांच कराने की और सुप्रीम कोर्ट में पेंडिंग याचिका को महाधिवक्ता की राय लेकर निस्तारण करवाने की। तीनों ही नहीं हुई। सराफ ने कहा- तब पूर्व मंत्री शांति धारीवाल ने कहा था कि यह नहीं हो सकता। तब मैंने कहा था कि मंत्री जी जो कहते हैं, वो करते हैं। आपने तो बात खराब करवा दी। इस पर मंत्री झाबर सिंह खर्रा ने कहा कि सुप्रीम कोर्ट से मामला निस्तारण होते ही सारे काम करवा दिए जाएंगे। यूडीएच की अनुदान मांगों पर बहस के दौरान कांग्रेस विधायक इंद्रा मीणा के कृषि मंत्री किरोड़ीलाल मीणा का जिक्र करने पर काफी देर तक तकरार होती रही। संसदीय कार्य मंत्री ने पलटवार किया।

धारीवाल-खर्रा के बीच जमकर वार-पलटवार चले

इससे पहले यूडीएच और स्वायत्त शासन की अनुदान मांगों पर बहस के दौरान कांग्रेस विधायक शांति धारीवाल और यूडीएच मंत्री झाबर सिंह खर्रा के बीच जमकर वार-पलटवार चले। धारीवाल ने कहा- कांग्रेस राज में 13 लाख पट्टे बांटे गए हैं, आप लोग हर बार जांच करवाएंगे, जांच करवाएंगे की रट लगाए हुए रहते हैं। उन्होंने कहा- अगर 13 लाख पट्टों में कोई गड़बड़ी है तो जांच क्यों नहीं करवाते? इस पर मंत्री खर्रा ने कहा- एक-एक नगर पालिका से रिपोर्ट मंगवा रहे हैं। धारीवाल ने पलटवार करते हुए कहा- यह टेक्निकल डिपार्टमेंट है और कई बार अनजान हाथों में काम चला जाता है तो उसका सत्यानाश होना तय होता है। यहां पर भी लग रहा है, यही हो रहा है।

नेता प्रतिपक्ष के आपत्ति करने पर उलझे बीजेपी विधायक

बारां में फर्जी पट्टे जारी करने से जुड़े सवाल पर बीजेपी विधायक कंवरलाल मीणा की नेता प्रतिपक्ष से नोक-झोंक हो गई। कंवरलाल मीणा ने सवाल उठाते हुए कहा कि कांग्रेस सरकार ने जाते-जाते रेवड़ियां बांटी। इस दौरान फर्जी पट्टे भी बांटे। फर्जी पट्टों के मुकदमे में पूर्व मंत्री प्रमोद जैन भाया का भी नाम है। इस पर नेता प्रतिपक्ष टीकाराम जूली ने आपत्ति जताते हुए कहा कि जो सदन का सदस्य नहीं है, उसका यह नाम नहीं लिया जा सकता। इस पर कंवरलाल मीणा उनसे उलझ गए और कहा कि आप हर बात में खड़े मत हुआ करो, एफआईआर में उनका नाम है। नेता प्रतिपक्ष की आपत्ति के बाद स्पीकर वासुदेव देवनानी ने भी कंवरलाल मीणा को टोकते हुए पूर्व मंत्री का नाम नहीं लेने को कहा। यूडीएच की अनुदान मांगों पर बहस के दौरान कांग्रेस विधायक इंद्रा मीणा के कृषि मंत्री किरोड़ीलाल मीणा का जिक्र करने पर काफी देर तक तकरार होती रही। संसदीय कार्यमंत्री ने पलटवार किया।

बीजेपी विधायक गोपाल शर्मा के कमेंट पर भारी हंगामा

विधानसभा में यूडीएच की अनुदान मांगों पर बहस के दौरान बीजेपी विधायक गोपाल शर्मा के कमेंट पर भारी हंगामा हुआ। कांग्रेस विधायक रफीक खान अनुदान मांगों पर बोलते हुए शहरी विकास के कामों पर कांग्रेस और बीजेपी राज की तुलना कर रहे थे। इस दौरान विधायक गोपाल शर्मा ने खड़े होकर पाकिस्तानी पाकिस्तानी कमेंट करना शुरू कर दिया। गोपाल शर्मा की इस टिप्पणी पर कांग्रेस विधायकों ने भारी विरोध जताया।

हमने गरीबों को 32 लाख करोड़ दिए : पीएम मोदी

हमें गाली देने वालों को यह नहीं पता कि 32 लाख में कितने जीरो होते हैं

बढ़ता राजस्थान

सूरत (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी एक बार फिर दो दिन के गुजरात दौरे पर हैं। अपने पहले कार्यक्रम में वे सिलवासा पहुंचे, जहां 450 बिस्तरों वाले नमो अस्पताल का उद्घाटन और 650 बिस्तरों की क्षमता वाले दूसरे चरण का शिलान्यास किया। यहां से पीएम सूरत पहुंचे। एयरपोर्ट से लिंबायत तक उनका करीब 3 किमी लंबा रोड शो हुआ। इस दौरान उनके स्वागत के लिए हर 100 मीटर पर 30 मंच बनाए गए थे। इसके बाद लिंबायत के नीलगिरी ग्राउंड में जनसभा को संबोधित करने पहुंचे। कार्यक्रम स्थल पर उन्होंने कई लोगों को ऑटोग्राफ भी दिया। पीएम सूरत में ही रात्रि विश्राम करेंगे और कल सुबह नवसारी जाएंगे।

मुद्रा योजना को लेकर विपक्ष पर हमला

सूरत की जनसभा में पीएम ने मुद्रा योजना को लेकर विपक्ष पर निशाना साधते हुए कहा- हमने मुद्रा योजना के तहत गरीबों को बिना किसी गारंटी के 32 लाख करोड़ रुपए दिए। जिन लोगों ने हमे गाली दी, उन्हें तो यह भी नहीं पता कि 32 लाख में कितने जीरे होते हैं।

10 साल पहले 5 करोड़ से ज्यादा फर्जी राशन कार्ड थे

उन्होंने आगे कहा- पहले ऐसे लोगों के भी राशन कार्ड बनाए जा रहे थे जो पैदा भी नहीं हुए थे। हमने सिस्टम से पांच करोड़ फर्जी नाम हटाए। पूरी व्यवस्था को आधार कार्ड से जोड़कर राशन कार्ड से जुड़ी एक बड़ी समस्या का समाधान किया। अन्य राज्यों से आए लोग यहां बड़ी संख्या में काम करते हैं। पहले एक स्थान का राशन कार्ड दूसरे स्थान पर मान्य नहीं होता था। हमने इस समस्या का समाधान किया और वन नेशन वन राशन कार्ड लागू किया। अब राशन कार्ड कहीं का भी हो, लाभार्थी को देश के हर शहर में इसका लाभ मिलता है।

गुजरात ने जो बनाया, उसे देश ने अपनाया है

पीएम ने आगे कहा कि यह लमेरा सौभाग्य है कि आज देश और गुजरात की जनता ने मुझे तीसरी बार सेवा करने का अवसर दिया है और उसके बाद सूरत की यह मेरी पहली यात्रा है। गुजरात ने जो भी बनाया, देश ने उसे प्यार से अपनाया है। स्वच्छता अभियान की चर्चा करते हुए प्रधानमंत्री ने कहा- जब देश में स्वच्छता की प्रतिस्पर्धा होती है तो सूरत शहर पहले या दूसरे नंबर पर होता है। इसका श्रेय सूरतवासियो को जाता है।

भारत को यह मंजूर नहीं कि गरीबों के घर में चूल्हा न जले

पीएम ने कहा- रोटी-कपड़ा और मकान से अधिक महत्वपूर्ण कोई चीज नहीं। मुझे किसी किताब में पढ़ने की जरूरत नहीं है कि रोटी के लिए परेशान एक गरीब व्यक्ति का दर्द क्या होता है। मैं इसे अनुभव कर सकता हूं। इसलिए हमारी सरकार ने जरूरतमंदों के भोजन का ध्यान रखा है। भारत अब यह स्वीकार नहीं करता कि गरीबों के घर में चूल्हा न जले और उनके बच्चे आंसुओं के साथ सोएं।

खाने के तेल में 10% की कटौती करें

पीएम ने अपने संबोधन में हेल्थ पर कई बातें कहीं। उन्होंने कहा- मैने यहां बड़ा अस्पताल बनवाया है, लेकिन मैं चाहता हूं कि किसी को यहां आना ही न पड़े। आप लोग हमेशा स्वस्थ रहें। क्योंकि, देश के लिए चिंता की बात यही है कि हमारे देश में भी मोटापे की समस्या बढ़ रही है। हाल ही में मोटापे की समस्या पर एक रिपोर्ट सामने आई है।

आतंकी तहव्वुर राणा की अर्जी फिर खारिज

अमेरिकी कोर्ट में प्रत्यर्पण रोकने की मांग की थी, कहा- पाकिस्तानी मुस्लिम हूं, भारत गया तो मारा जाऊंगा

बढ़ता राजस्थान

वॉशिंगटन। 2008 मुंबई हमलों के दोषी तहव्वुर राणा के भारत प्रत्यर्पण पर रोक लगाने की याचिका अमेरिकी सुप्रीम कोर्ट ने गुरुवार को खारिज कर दी। तहव्वुर ने भारत आने से बचने के लिए याचिका दायर की थी। इसमें उसने कहा था कि पाकिस्तानी मूल का मुस्लिम होने की वजह से उसे भारत में प्रताड़ित किया जाएगा। राणा ने याचिका में कहा था कि वह कई बीमारियों से पीड़ित है, अगर उसका प्रत्यर्पण नहीं रोका गया तो वह भारत में सर्वाइव नहीं कर पाएगा। इसलिए उसके प्रत्यर्पण पर इमरजेंसी स्टे लगाया जाए। हालांकि सुप्रीम कोर्ट की जज एलेना कगान ने यह दलील नहीं मानी और याचिका खारिज कर दी। तहव्वुर राणा को 2009 में एफबीआई ने गिरफ्तार किया था। राणा को अमेरिका में लश्कर-ए-तैयबा का समर्थन करने के लिए दोषी ठहराया गया था। फिलहाल वह लॉस एंजिल्स के एक हिरासत केंद्र में बंद हैं। 13 नवंबर 2024 को राणा ने निचली अदालत के प्रत्यर्पण के फैसले के खिलाफ सुप्रीम कोर्ट में अपील की थी, जिसे 21 जनवरी को खारिज कर दिया गया था। इससे पहले उसने सैन फ्रांसिस्को की एक अदालत में अपील की थी, जो खारिज कर दी गई थी। कोर्ट ने फैसले में कहा था कि दोनों देशों के बीच प्रत्यर्पण संधि के तहत उसे भारत भेजा जा सकता है। मुंबई हमले की 405 पन्नों की चार्जशीट में राणा का नाम भी आरोपी के तौर पर दर्ज है। इसके मुताबिक राणा आईएसआई और लश्कर-ए-तैयबा का मेंबर है। चार्जशीट के मुताबिक राणा हमले के मास्टरमाइंड मुख्य आरोपी डेविड कोलमैन हेडली की मदद कर रहा था।

सुशासन के लिए राजकोषीय विवेक की जरूरत है, न कि अल्पकालिक लोकलुभावनवाद की : धनखड़

बढ़ता राजस्थान

नई दिल्ली। उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने डेमोक्रेसी से इमोक्रेसी की ओर बदलाव पर राष्ट्रीय बहस का आह्वान किया। उन्होंने कहा, राष्ट्रीय बहस की आवश्यकता है ताकि हम डेमोक्रेसी से इमोक्रेसी की ओर बदलाव पर ध्यान दे सकें। भावना से प्रेरित नीतियां, भावना से प्रेरित बहसें, प्रवचन सुशासन के लिए खतरा हैं। लोकलुभावनवाद ऐतिहासिक रूप से खराब अर्थशास्त्र है।

कोई नेता जब लोकलुभावनवाद से एक बार जुड़ जाता है तो इस संकट से बाहर निकलना मुश्किल हो जाता है। केंद्रीय उद्देश्य लोगों की भलाई, लोगों की सबसे बड़ी भलाई, लोगों की स्थायी भलाई होनी चाहिए। लोगों को खुद को सशक्त बनाने के योग्य बनाएं, न कि उन्हें क्षणिक रूप से सशक्त बनाएं क्योंकि इससे उनकी उत्पादकता प्रभावित होती है। धनखड़ ने मुंबई में आज 'नेतृत्व और शासन' विषय पर आयोजित प्रथम 'मुरली देवड़ा स्मृति संवाद' में उद्घाटन भाषण देते हुए राजनीतिक क्षेत्र में तुष्टीकरण की राजनीति और सांत्वना देने की रणनीतियों के उभरने पर गहरी चिंता व्यक्त की। उन्होंने कहा, राजनीति में एक नई रणनीति उभर रही है, और यह रणनीति तुष्टीकरण या सांत्वना देने की है।

यदि चुनावी वादों पर अत्यधिक खर्च किया जाता है, तो बुनियादी ढांचे में निवेश करने की राज्य की क्षमता भी उसी अनुपात में कम हो जाती है। यह विकास यात्रा के लिए हानिकारक है। लोकतंत्र में चुनाव महत्वपूर्ण है, लेकिन इसका समापन नहीं। मैं लोकतांत्रिक मूल्यों के हित में सभी राजनीतिक दलों के नेतृत्व से इस बात पर

आम सहमति बनाने का आह्वान करता हूं कि ऐसे चुनावी वादों में शामिल होना, जिन्हें राज्य के पूंजीगत व्यय की कीमत पर ही पूरा किया जा सकता है, की समीक्षा की जानी चाहिए। कुछ सरकारें जिन्होंने इस तुष्टीकरण और तुष्टीकरण तंत्र का सहारा लिया, उन्हें सत्ता में बने रहना बहुत मुश्किल हो रहा है। उन्होंने स्पष्ट किया कि हाशिए पर पड़े समुदायों के लिए सकारात्मक कार्रवाई तुष्टिकरण की राजनीति से अलग है। उन्होंने कहा, मुझे गलत नहीं समझें, देवियो और सज्जनो, क्योंकि भारतीय संविधान ने जहां हमें समानता का अधिकार दिया है, वहीं यह अनुच्छेद 14, 15 और 16 में सकारात्मक शासन- सकारात्मक कार्रवाई, एससी, एसटी के लिए आरक्षण, आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के लिए आरक्षण की एक स्वीकार्य श्रेणी प्रदान करता है। यह पवित्र है। ग्रामीण भारत, किसान के लिए कुछ असाधारण परिस्थितियां हैं, जहां सकारात्मक कदम उठाए जाने की जरूरत है। लेकिन यह उन अन्य पहलुओं से बहुत अलग है, जिनके बारे में मैं बात कर रहा था। यह किसी को सांत्वना देने या तुष्ट करने वाली नहीं है। यह न्यायोचित आर्थिक नीति है।

सम्पादकीय

गरीब मुस्लिमों के हित में है वक्फ बिल मुस्लिम महिलाओं-पसमांदा वर्ग के लोगों की बेहतरी की राह खुलेगी

हाल में केंद्रीय मंत्रिमंडल ने जगदंबिका पाल के नेतृत्व वाली संयुक्त संसदीय समिति (जेपीसी) द्वारा प्रस्तावित वक्फ संशोधन विधेयक, 2024 के सभी 14 संशोधनों को मंजूरी दे दी। इसके बजट सत्र के दूसरे भाग में संसद में पेश किए जाने की उम्मीद है। यह संशोधन विधेयक वक्फ बोर्ड में व्याप्त अनियमितताओं एवं विसंगतियों को दूर करने के उद्देश्य से वक्फ अधिनियम, 1995 के कुछ प्रविधानों को हटाने की बात करता है। सरकार का कहना है कि इससे वक्फ बोर्ड के प्रबंधन में सुधार होगा। इस विधेयक का उद्देश्य वक्फ संपत्तियों के प्रबंधन में पारदर्शिता और जवाबदेही बढ़ाना, भ्रष्टाचार आदि पर नियंत्रण पाना, वक्फ संपत्तियों के विकास और संरक्षण को बढ़ावा देने के साथ-साथ यह सुनिश्चित करना भी है कि वक्फ संपत्तियों का उपयोग हितधारक समुदाय के लाभ के लिए ही किया जा सके। सरकार के इन दावों के बावजूद विपक्ष एवं उलेमाओं का एक वर्ग और तथाकथित सेक्युलर-लिबरल बुद्धिजीवियों द्वारा इस प्रस्तावित विधेयक का विरोध किया जा रहा है। ऑल इंडिया मुस्लिम पर्सनल ला बोर्ड ने तो वक्फ संशोधन बिल के विरोध में बड़ा प्रदर्शन करने का एलान किया है। इस विधेयक का विरोध करने वालों के अपने कुछ तर्क हैं और आशंकाएं भी। वे इसे मुस्लिम समुदाय के अधिकारों पर सरकार का हस्तक्षेप मानते हैं।

उनका मानना है कि यह विधेयक धार्मिक स्वतंत्रता और वक्फ संपत्तियों के प्रबंधन में हस्तक्षेप करता है। इस विधेयक के संदर्भ में सत्तापक्ष और विपक्ष के तो अपने-अपने तर्क हैं ही, जिस मुस्लिम समुदाय के लिए यह विधेयक लाया जा रहा है, उसके भीतर भी इस विधेयक को लेकर अलग-अलग प्रतिक्रियाएं हैं। मुस्लिम समाज को एक समतावादी समाज माना जाता है, लेकिन व्यवहार में भारतीय मुस्लिम समाज में भी भेद और स्तरीकरण दिखाई देता है। भारतीय उपमहाद्वीप में मुसलमानों के बीच जाति व्यवस्था का अस्तित्व है। इसमें तीन प्रमुख श्रेणियां देखी जाती हैं। अशराफ उच्च वर्ग के मुसलमान माने जाते हैं, जिनका दावा है कि वे अरबी, तुर्की, फारसी या अफगान वंश से संबंधित हैं। अशराफ में सैयद, शेख, पठान और मुगल जैसी उच्च जातियां आती हैं। अजलाफ निम्न वर्ग के मुसलमान माने जाते हैं, जिनका संबंध परिवर्तित हिंदुओं से है। इस श्रेणी में कारीगर, किसान और श्रमिक वर्ग के मुसलमान शामिल होते हैं। अरजाल सबसे निचली श्रेणी के मुसलमान माने जाते हैं, जो मुख्तः दलित जातियों से मतांतरित हुए हैं। इन्हें समाज में सबसे अंतिम पायदान पर रखा जाता है। नीचे के इन दो मुस्लिम वर्गों को मिलाकर पसमांदा मुस्लिम समूह की रचना होती है। पसमांदा मुस्लिम एक सामाजिक-आर्थिक और जातिगत श्रेणी है, जो भारतीय उपमहाद्वीप में मुस्लिम समाज के पिछड़े और वंचित वर्गों को संदर्भित करती है। :पसमांदा: शब्द का अर्थ है पीछे छूट गए: या :वंचित:। यह उन मुसलमानों का प्रतिनिधित्व करता है, जो ऐतिहासिक रूप से सामाजिक, आर्थिक और शैक्षिक रूप से पिछड़े हुए हैं।

अधिकतर पसमांदा मुस्लिम अधिकार कार्यकर्ता वक्फ बोर्डों की कार्यप्रणाली पर सवाल उठाते रहे हैं। हैरानी नहीं कि उनकी नजर में वक्फ संशोधन बिल से वक्फ की संपत्तियों के पंजीकरण, सत्यापन, लेनदेन में पारदर्शिता आएगी और गरीब मुसलमानों को वक्फ के विवादों से मुक्ति मिलेगी। प्राय: मुसलमानों की हर संस्था पर अशराफ वर्ग यानी खुद को विदेशी मूल का मुसलमान कहने वालों का कब्जा है। वे यह नहीं देख पा रहे हैं कि संशोधित वक्फ बिल के प्रस्तावों में महिलाओं के साथ-साथ पसमांदा वर्ग के पिछड़े मुसलमानों के लिए भी ऐसे अहम प्रविधान किए गए हैं, जिनसे महिलाओं-पसमांदा वर्ग के लोगों की बेहतरी की राह खुलेगी।

आज का इतिहास – बढ़ता राजस्थान

8 मार्च की महत्त्वपूर्ण घटनाएँ

- इंग्लैंड के राजा विलियम तृतीय की मौत के बाद 1702 में महारानी ऐनी ने सत्ता संभाली।
- ब्रिटिश हाउस ऑफ कॉमन्स ने महिलाओं के मताधिकार से संबंधित विधेयक को 1907 में ठुकरा दिया।
- काम के लिए बेहतर वेतन, कम घंटे और वोट देने का अधिकार को लेकर 1908 में न्यूयॉर्क में कई महिलाओं ने एक रैली में हिस्सा लिया।
- अमेरिकी सोशलिस्ट पार्टी ने 1909 में पहली बार राष्ट्रीय महिला दिवस मनाया था।
- कोपनहेगेन (डेनमार्क) में 1910 में हुए महिलाओं के अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में 08 मार्च को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस तय करने का प्रस्ताव रखा।
- यूरोप में 1911 में पहली बार अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस मनाया गया।
- स्पेन की राजधानी मैड्रिड में 1921 में पार्लियामेंट से बाहर निकलते वक्त राष्ट्रपति एडवर्डो दातो की हत्या।
- महात्मा गांधी ने सविनय अवज्ञा आंदोलन 1930 में शुरू किया।
- द्वितीय विश्व शुद्ध के दौरान 1942 में जापानी सेना ने वर्मा के रंगून पर कब्जा किया।
- एअर इंडिया इंटरनेशनल की 1948 में स्थापना।
- इराक के गवर्निंग कार्उसिल द्वारा एक नए संविधान पर 2004 में हस्ताक्षर किए गए।
- रूस ने ईरान मामले पर अपना प्रस्ताव 2006 में वापस लिया।
- फ़िल्म फ़ेयर आफ़ फुटपाथ ने 2008 में काहिरा इंटरनेशनल फ़ेस्टीवल फ़ॉर चिल्ड्रेन में भारत का प्रतिनिधित्व किया।
- भारत के अग्रणी गोल्फ खिलाड़ी ज्योति रंधावा ने 2009 में थाइलैंड ओपन ख़िताब जीता।
- उत्तर कोरिया ने 2013 में दक्षिण कोरिया के साथ सभी शांति समझौतों को समाप्त कर दिया।

8 मार्च को जन्मे व्यक्ति

- 'गाँधी स्मारक निधि' के प्रथम अध्यक्ष, गाँधीवादी नेता, स्वतंत्रता सेनानी और पंजाब के प्रथम मुख्यमंत्री गोपी चन्द भार्गव का 1889 में जन्म।
- प्रसिद्ध मराठी लेखक हरी नारायण आप्टे का 1864 में जन्म।
- भारतीय राजनीतिज्ञ और ब्रिटिश भारत के उड़ीसा प्रान्त के मुख्यमंत्री विश्वनाथ दास का 1889 में जन्म।
- भारतीय कलाकार दामेर्ला रामाराव का 1897 में जन्म।
- प्रसिद्ध फिल्म गीतकार साहिर लुधियानवी का 1921 में जन्म हुआ।
- राजस्थान की पहली महिला मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे सिंधिया का 1953 में जन्म।
- भारतीय अभिनेता फ़रदीन ख़ान का 1975 में जन्म हुआ।
- भारतीय महिला क्रिकेट खिलाड़ी हरमनप्रीत कौर का 1989 में जन्म हुआ।
- भारत के ही नहीं बल्कि विश्व के दस सर्वश्रेष्ठ वॉलीबॉल खिलाड़ियों में से एक जिम्मी जॉर्ज का 1955 में जन्म।

महिला दिवस : कुछ कर गुजरने की जिद्द ही प्रेरणा स्त्रोत बनती है वेदों से लेकर आधुनिक काल तक नारी मानव जीवन की प्रेरणा स्त्रोत

– विवेक वैश्णव

भारतीय सनातन संस्कृति एक सम्पन्न परंपरा और सांस्कृतिक मूल्यों से समृद्ध है जहां महिलाओं का समाज में प्रमुख स्थान रहा है। सनातन संस्कृति में महिलाओं को समाज के हर क्षेत्र में बराबरी का दर्जा प्राप्त था। वैदिक ग्रंथों से पता चलता है कि महिलाओं को शिक्षा, यज्ञ, ज्ञान, आध्यात्म आदि क्षेत्रों में स्वतंत्रता और समानता मिली थी। वेदों से लेकर आधुनिक काल तक नारी को मानव जीवन की प्रेरणा स्रोत के रूप में देखा गया है। भारतीय समाज में नारी को देवी, शक्ति, लक्ष्मी की संज्ञा दी गई है। यहां महिला और पुरूष के बीच समानता की नहीं बल्कि अर्धनारीश्वर की संकल्पना के साथ स्त्री और पुरूष को एक दूसरे के पूरक होने की बात की जाती है।

आज महिलाए धरता से लकर चांद तक का सफर तय कर चुकी हो लेकिन आज भी समाज में समानता के लिए उन्हे कही ना कही संघर्श करना ही पड़ता है। समाज को तब तक विकसित नही किया जा सकता है जब तक महिलाएं हर क्षेत्र में स्वतंत्र और सशक्त न हो जाए। अन्तर्राश्ट्रीय महिला दिवस महिलाओं की उपलब्धियों को बनाए रखना, चुनौतियों को पहचानना और उनके अधिकारों और लैंगिक समानताओं पर ध्यान केन्द्रित करना है। महिला दिवस महज एक दिवस का उत्सव नही बल्कि महिला सशक्तिकरण और समानता की दिशा में एक कदम है। वर्श 2025 की थीम ''कार्रवाई में तेजी लाना'' का उद्देश्य लैंगिग समानता प्राप्त करने के लिए दुनिया भर में प्रगति में तेजी लाना है।

पहला राश्ट्रीय महिला दिवस 28 फरवरी 1909 को अमेरीका की सोशलिस्ट पार्टी ने मनाया था। इसके बाद 1910 में इसे वैश्विक मान्यता तब मिली जब जर्मन समाजवादी नेता क्लारा जेटकिन ने 8 मार्च को अन्तर्राश्ट्रीय महिला दिवस घोशित करने का प्रस्ताव रखा। पहली बार अन्तर्राश्ट्रीय महिला दिवस 19 मार्च 1911 में जर्मनी, आस्ट्रिया, डेनमार्क व स्विटजरलैण्ड में मनाया गया। यह दिन भी इसलिए चुना गया क्योंकि 1848 में इसी दिन परशिया के राजा ने महिलाओं के लिए वोट षुरू करने का वादा किया था लेकिन इसे पूरा करने में वे विफल रहे थे। वर्श 1857 में 8 मार्च को ही महिला कपड़ा श्रमिकों के एक समूह ने अनुचित कार्य स्थितियों और असमान अधिकारों के विरोध में मार्च निकाला था। संयुक्त राश्ट्र ने महिलाओं की चिंताओं पर वैश्विक ध्यान आकर्शित करने के लिए 1975 में आधिकारिक रूप से 8 मार्च को अन्तर्राश्ट्रीय महिला दिवस मनाने की घोशणा करते हुए मैक्सिको सिटी में पहला सम्मेलन आयोजित किया था। 8 मार्च को रूस के पेत्रोग्राद में महिलाओं ने प्रदर्शन किया था तथा इस प्रदर्शन ने रूसी क्रांति कों महत्वपूर्ण दिशा दी थी। इस प्रदर्शन को याद करने के लिए 8 मार्च को चुना गया। यह प्रदर्शन जूलियन कैलेण्डर में 23 फरवरी को हुआ था जो कि पश्चिमी ग्रेगोरियन कैलेण्डर में 8 मार्च को हुआ था। भारत वो भूमि है जहां प्रभु श्री राम ने भी सीता माता की अनुपस्थिति में अश्वमेध यज्ञ उनकी मूर्ति के साथ किया था। भारतीय संस्कृति में भगवान श्रीकृष्ण को नन्दलाल कहा जाता हैं तो देवकी नंदन और यशोदा नन्दन भी कहा जाता हैं। भगवान श्रीराम दशरथ नन्दन हैं तो कौशल्या नन्दन और सियावर भी हैं। अनादि काल से ही महिलाएं मानवता की प्रेरणा का स्रोत रही हैं। झांसी की रानी लक्ष्मीबाई से लेकर भारत की पहली महिला शिक्षिका सावित्रीबाई फुले तक महिलाओं ने समाज में बदलाव के बड़े उदाहरण स्थापित किए हैं। भारतीय इतिहास महिलाओं की उपलब्धि से भरा पड़ा है। आनंदीबाई गोपालराव जोशी (1865-1887) पहली भारतीय महिला चिकित्सक थीं और संयुक्त राज्य अमेरिका में पश्चिमी चिकित्सा में दो साल की डिग्री के साथ स्नातक होने वाली पहली महिला चिकित्सक रही है। सरोजिनी नायडू ने साहित्य जगत में अपनी छाप छोड़ी। हरियाणा की संतोष यादव ने दो बार माउंट एवरेस्ट फतेह किया। बॉक्सर एमसी मैरी कॉम एक जाना पहचाना नाम है। हाल के वर्षों में हमने कई महिलाओं को भारत में शीर्ष पदों पर और बड़े संस्थानों का प्रबंधन करते हुए भी देखा है। अरुंधति भट्टाचार्य एसबीआई की पहली महिला अध्यक्ष, अलका मित्तल ओएनजीसी की पहली महिला सीएमडी, सोमा मंडल सेल अध्यक्ष आदि नामचीन महिलाएं हैं जिन्होनें विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है। राधिका घई ने 2011 में दैनिक उपयोगिता वस्तुओं की मार्केटिंग के लिए शॉपक्लूज नामक ऑन लाईन स्टार्टअप शुरू यूनिकॉर्न क्लब में प्रवेश करने वाली पहली भारतीय महिला उद्यमी बनी। राजोशी घोष के हसुरा, स्मिता देवराह के लीड स्कूल, दिव्या गोकुलनाथ के बायजू जैसे यूनिकॉर्न हैं जो महिला स्टार्टअप की क्षमता के बारे में बहुत कुछ बयां करते है। महिला ई-हाट, स्टार्टअप स्कीम, पोषण अभियान, महिला हेल्पलाइन, बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ, सुकन्या समृद्धि योजना जैसे कदम महिलाओं के सामाजिक, आर्थिक एवं शैक्षणिक उत्थान के लिए केन्द्र की मोदी सरकार की प्रतिबद्धता को दर्शाते हैं। यह भी वर्तमान सरकार की नीतियों का ही परिणाम है कि आज महिलाएं भारतीय सेना की तीनों टुकड़ियों में लड़ाकू जहाज उड़ाने, युद्धपोत चलाने से लेकर तोप चलाने में भी अपना योगदान दे रही हैं। आज भी विश्व परिदृश्य के साथ ही भारत दृश्टिकोण में भी महिलाओं को सामाजिक रूप से सशक्त करने की दिशा में सरकारों को विभिन्न प्रयास करने पड़ रहे हैं। इसे विडंबना ही कहा जाएगा कि हमें भारत की संसद में महिलाओं को 33 प्रतिशत आरक्षण दिलाने के लिए वर्षों का संघर्ष करना पड़ा। विश्व आर्थिक मंच के आंकड़ों के अनुसार प्रगति की वर्तमान दर से पूर्ण लैंगिग समानता तक पहुंचने में 2158 तक का समय लगेगा।

त्रिभाषा फार्मूला को राजनीतिक अखाड़ा बनाने के पीछे किसका स्वार्थ है?

– रामस्वरूप रावतसरे

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) और त्रिभाषा फार्मूला एक बार फिर सुर्खियों में है। बताया जा रहा है कि इसकी वजह से ही केंद्र सरकार द्वारा तमिलनाडु को समग्र शिक्षा अभियान के अंतर्गत दी जाने वाली धनराशि को रोकना है। तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एमके स्टालिन ने पिछले सप्ताह ही प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को पत्र लिखकर कहा था कि केंद्र सरकार ने अब तक राज्य को 2,152 करोड़ रुपये जारी नहीं किए हैं। शिक्षा का अधिकार अधिनियम के प्रावधानों को लागू करने के लिए इस फंड की जरूरत है। स्टालिन ने केंद्र सरकार से जल्द ही फंड रिलीज करने की मांग भी की थी।

बीते दिनों मुख्यमंत्री स्टालिन ने धर्मेंद्र प्रधान के एक बयान की आलोचना करते हुए सोशल मीडिया पर एक वीडियो साझा किया था, जिसमें प्रधान यह कहते हुए दिख रहे थे कि तमिलनाडु को भारतीय संविधान की शर्तों को मानना ?होगा और तीन भाषा नीति ही कानून का शासन है। जब तक तमिलनाडु एनईपी और तीन भाषा फार्मूले को स्वीकार नहीं कर लेता, तब तक प्रदेश को समग्र शिक्षा अभियान के तहत फंड नहीं उपलब्ध कराया जाएगा। मीडिया के अनुसार, स्टालिन ने यह भी कहा है कि हिंदी सिर्फ मुखौटा है और केंद्र सरकार की असली मंशा संस्कृत थोपने की है। उन्होंने कहा कि हिंदी के कारण उत्तर भारत में अवधी, बृज जैसी कई बोलियां खत्म हो गईं। राजस्थान का उदाहरण देते हुए स्टालिन ने यह भी कहा कि केंद्र सरकार वहां उर्दू को हटाकर संस्कृत थोपने की कोशिश कर रही है। अन्य राज्यों में भी ऐसा होगा इसलिए तमिलनाडु इसका विरोध कर रहा है। दरअसल यह विवाद लगभग एक सदी से चला आ रहा है. जानते हैं इसकी जड़ कहां है? तीन भाषा की नीति हिंदी, अंग्रेजी और संबंधित राज्यों की अपनी क्षेत्रीय भाषा से जुड़ी है। पूरे देश में हिंदी भाषा में पढ़ाई करवाना, एक पुरानी चली आ रही व्यवस्था का ही हिस्सा था। सबसे पहले साल 1968 में राष्ट्रीय शिक्षा नीति में इसे आधिकारिक रूप से शामिल किया गया था। त्रिभाषा सूत्र की चर्चा आजादी के कुछ समय बाद ही विश्वविद्यालयों में शिक्षा से जुड़े सुझावों को लेकर बनाए गए राधाकृष्णन आयोग (1948-49) की रिपोर्ट से ही शुरू हो गई थी। इस रिपोर्ट में सुझाव दिया गया कि प्रादेशिक भाषा, हिंदी और अंग्रेजी भाषा में शिक्षा दी जाए। इसके बाद साल 1955 में डॉ. लक्ष्मण स्वामी मुदलियार के नेतृत्व में माध्यमिक शिक्षा आयोग बना। इस आयोग ने राज्य की अपनी क्षेत्रीय भाषा के साथ हिंदी की पढ़ाई का द्विभाषा सूत्र दिया और अंग्रेजी या किसी और एक भाषा को वैकल्पिक भाषा बनाने का प्रस्ताव दिया। इसके बाद कोठारी आयोग बना. उसकी सिफारिश पर 1968 में राष्ट्रीय शिक्षा नीति में इस त्रिभाषा सूत्र को स्वीकार कर लिया गया। लेकिन ये समाधान या सिफारिश दक्षिणी राज्यों में धरातल पर नहीं लाई जा सकी। एनईपी 2020 ने तीन-भाषा फॉर्मूले को बरकरार रखा है, जिसे पहली बार 1968 के एनईपी में पेश किया गया था। हालांकि, इन दोनों में एक मुख्य अंतर यह है कि उस समय एनईपी ने हिंदी को पूरे देश में एक अनिवार्य भाषा बनाने की वकालत की थी। इसके उलट एनईपी 2020 को अधिक लचीलापन बनाया गया, जो तकनीकी रूप से किसी भी राज्य पर कोई विशिष्ट भाषा नहीं थोपती है। इसमें कहा गया है कि बच्चों द्वारा सीखी जाने वाली तीन भाषाएं राज्यों, क्षेत्रों और निश्चित रूप से स्वयं छात्रों की पसंद होंगी। हालांकि, इन तीन में से कम से कम दो भाषाएं भारत की मूल भाषाएं होनी चाहिए। इसका मतलब है, राज्य की भाषा के अलावा, बच्चों को कम से कम एक अन्य भारतीय भाषा

शख्सियत – बढ़ता राजस्थान

श्री हितेश गैरा
(डायरेक्टर आर्शिवाद गार्डन)

नमस्कार साथियो हमारी आज की शख्सियत कॉलम के स्टार हैं हितेश गेरा जोकि आशीर्वाद गार्डन के डायरेक्टर है । दोस्तो हितेश का अर्थ होता है दूसरों की भलाई सोचने वाला और ये शख्सियत अपने नाम के अर्थ को पूर्णत: सार्थक करती है जैसा नाम वैसा ही काम हमेशा दूसरों की भलाई सोचना और मदद के लिए तत्पर रहने जैसा स्वभाव है हमेशा हंसमुख चेहरा और चेहरे पर गजब का आत्मविश्वास ही इनकी पहचान है। इनका जन्म 11 नवंबर 1979 को अलवर में हुआ। प्राथमिक शिक्षा बडोडमेव सरकारी विद्यालय में हुई उसके बाद 12 अलवर में सैनी स्कूल से किया । इसके बाद सन 2002 में डी फार्मा डीग से किया साथ साथ मे ग्रेजुएशन भी पूरी की उसके बाद 2004 में जयपुर के प्राइवेट कॉलेज से होटल में मैनेजमेंट का कोर्स किया। फिर होटल मैनेजमेंट का कोरस पूरा करके मेडिकल रिप्रेजेन्टेटिव की नोकरी की 2016 तक लेकिन नौकरी में संतुष्टि नही मिली तो एक नई उड़ान भरी ओर 2016 में ही कुछ लागत से अपने कैटरिंग के व्यवसाय में पैर रखा । और क्वालिटी और तस्सलीपूर्वक लोगो का काम करके जल्दी ही कामयाबी हासिल की और ये कामयाबी की रफ्तार आज तक निरंतर जारी है । हितेश बताते है कि उनकी डी फार्मा की पढ़ाई खराब नही गयी उसमे जो उन्होंने सीखा उसको वह आज अपने बिजनेस में फॉलो करके ही कामयाबी पा रहे है और नौकरी से वो बिजनेस में सिर्फ इसलिए आये क्योकि वो नौकरी करने से ज्यादा नौकरी देने में विश्वास रखते है। टीम बढ़ता राजस्थान इनके उज्जवल भविष्य की कामना करती है।

रूपक शर्मा

2025_065 a – बढ़ता राजस्थान

Suduko

1	9	4			2	6		
6			1			8		
		5		7		2		
		9				5	7	
2	6							4
	1		2	4	8	9		6
7		1		6			9	
	5		7				6	1
4	3		5	1	9	7		

Ans_2025_064

9	6	1	3	5	7	2	8	4
2	3	5	4	1	8	9	7	6
7	4	8	2	9	6	1	5	3
1	2	9	7	8	4	3	6	5
4	5	6	9	3	2	8	1	7
3	8	7	5	6	1	4	2	9
6	1	3	8	4	5	7	9	2
5	9	2	1	7	3	6	4	8
8	7	4	6	2	9	5	3	1

कैसे खेलें

वर्ग को 1 से 9 तक अंकों से ऐसे भरें कि आड़ी व खड़ी पंक्ति के साथ ही 3 गुणा 3 के बॉक्स में 1 से 9 तक अंक आएं। कोई अंक दुबारा नहीं आए।

आज का राशिफल

हमारे अनुभवी ज्योतिषियों की टीम के अनुसार आप कई विविध लक्ष्यों को पूरा करेंगे। क्या आप यह जानना चाहते है कि आपके जीवन के ऐसे कौनसे क्षेत्र है, जहां आपके सितारे बुलंद रहेंगे और दूसरी तरफ, आपको किस बातों से सावधान रहना चाहिए। हम न सिर्फ हमारे काम में और जटिल मुद्दों को सुलझाते वक्त सकारात्मक ऊर्जा को महसूस करेंगे, बल्कि पारम्परिक संबंधों में भी, जहां यह स्थानान्तरण हमें सताए और बातचीत में लाभ प्रदान करेगा

मेष

आज का दिन शुभ फलदायी है। आपकी रचनात्मक और कलात्मक शक्तियों में वृद्धि होगी। मानसिक रूप से आज आप वैचारिक स्थिरता का अनुभव करेंगे। इसके परिणामस्वरूप आप लगन के साथ काम कर पाएंगे।

वृष

व्यापार के क्षेत्र में आपकी प्रतिभा बढ़ सकती है। पदोन्नति की संभावना है। पिता की संपत्ति से लाभ होगा। कला एवं खेल-कूद में निपुण व्यक्तियों को अपनी प्रतिभा दर्शाने का मौका मिलेगा। सरकार के साथ धन का व्यवहार सफल रहेगा।

मिथुन

दुर्घटना में संभलना अनिवार्य है। आय की अपेक्षा खर्च अधिक होगा। मानसिक चिंता के कारण मन व्यग्र रहेगा। अनुचित कार्यों में शक्ति का व्यय होगा। आध्यात्मिकता और ईश्वरीय शक्ति आपकी सहायक सिद्ध होगी।

कर्क

ईश्वर की आराधना एवं आध्यात्मिकता आपके मन को शांति प्रदान कर सकती है। आज आप दैनिक कामों से दूर आनंद-प्रमोद में खोए रह सकते हैं। किसी मनोरंजन स्थल या पर्यटन स्थल पर जाने का कार्यक्रम बन सकता है। संतान और जीवनसाथी से सुख मिलेगा।

सिंह

समाज में मान-सम्मान की प्राप्ति होगी। मित्रों और स्वजनों के साथ घूमना-फिरना आनंदप्रद हो सकता है। परिवार के साथ अच्छा समय गुजरेगा। आज आपके लिए आर्थिक लाभ का दिन है। घर में शांति और आनंद का वातावरण रहेगा।

कन्या

आज का दिन आपके लिए बहुत लाभकारी है। किसी अन्य तरीके से भी आर्थिक लाभ होगा। मित्रों के साथ मुलाकात हो सकती है। व्यपार में लाभ होगा। शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। नौकरी करने वाले लोगों को लाभ मिलेगा।

तुला

आज आप खर्च में संयम बनाए रखें। धन संबंधी एवं लेन-देन संबंधी सभी कामों में सावधानी रखने की जरूरत है। किसी के साथ विवाद न हो, इसका ध्यान रखें। मित्रों एवं परिवारजनों के साथ मनमुटाव होने की आशंका बनी रहेगी।

वृश्चिक

चिंता से मुक्ति का अनुभव करेंगे। मित्रों के साथ किसी प्राकृतिक स्थान पर जाने की योजना बन सकती है। आज का दिन भोजन सुख के लिए अच्छा है। आपके दृढ़ मनोबल और भरपूर आत्मविश्वास से हर काम सफलतापूर्वक संपन्न होंगे।

धनु

शारीरिक कष्ट, विशेषकर आंखों में पीड़ा होने की आशंका रहेगी। परिजनों और स्नेहियों के साथ किसी घटना की संभावना है। आपकी बात-चीत या व्यवहार से किसी को कोई भ्रम न हो इसका ध्यान रखें। आज कोई भी काम बिना विचारे नहीं करें।

मकर

जमीन जायदाद के काम में सावधानी रखें। आज आप का दिन बहुत शुभ है। धार्मिक कार्य एवं यात्रा के लिए समय अनुकूल है। मित्रों एवं सम्बंधियों से हुई मुलाकात के कारण आनंद होगा। मित्रों से लाभ होगा।

कुंभ

अपने उत्तदायित्व अच्छी तरह से निभा पाएंगे। आर्थिक योजना बना सकेंगे। आभूषण, सौंदर्य प्रसाधन और मनोरंजन के पीछे खर्च होगा। परिवार के सदस्यों के साथ आनंदपूर्वक समय बीतेगा। आप के आत्मविश्वास में वृद्धि होगी।

मीन

विदेश जाने के लिए अनुकूल परिस्थितियों का निर्माण होगा। स्नेहीजनों के समाचार मिलने से आनंद होगा। भाई-बहनों से आर्थिक रूप से लाभ होगा। आप की वाणी पर संयम रखें। नियम विरुद्ध काम ना करें। नए संबंधों से नुकसान हो सकता है।

चौथ का बरवाड़ा पुलिस की बड़ी कार्यवाही, साइबर ठगी के मास्टरमाइंड को किया गिरफ्तार

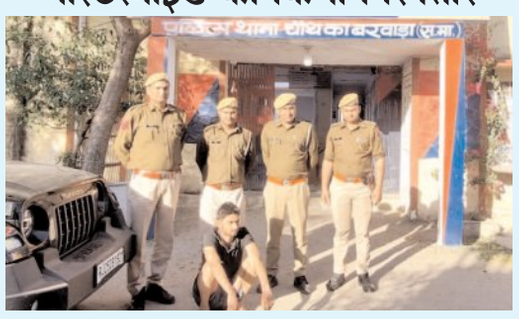

बढ़ता राजस्थान

चौथ का बरवाड़ा (चेतन परिहार)। पुलिस द्वारा साइबर ठगी के खिलाफ चलाए जा रहे ऑनलाइन ठगी की रोकथाम हेतु ऑपरेशन में पुलिस अधीक्षक ममता गुप्ता के निर्देशन में की जा रही कार्यवाही के दौरान चौथ का बरवाड़ा पुलिस ने बड़ी कार्यवाही करते हुए ऑनलाइन ठगी के मास्टरमाइंड अंकित मीणा को गिरफ्तार किया है। थानाधिकारी चौथ का बरवाड़ा सुमन कुमार ने बताया की मुखबिर की सूचना पर मास्टर ऑनलाइन ठगी के मास्टरमाइंड अंकित मीणा को नयागांव मोड भगवतगढ़ के पास से गिरफ्तार किया गया है । आरोपी के पास से एक थार गाड़ी भी बरामद की गई है । थानाधिकारी ने बताया कि आरोपी शातिर किस्म का है और कार्यवाही से बचने के लिए जयपुर कमरा लेकर रहने लगा था, जो कल रात को ही जयपुर से अपने घर आया था।

आपसी भाई चारे से सौहार्दपूर्ण वातावरण में मनाए आगामी त्यौहार : शुभम

जिला स्तरीय शांति समिति की बैठक आयोजित

बढ़ता राजस्थान

सवाई माधोपुर (राकेश शर्मा)। जिले में आगामी दिनों में होली, रामनवमी एवं ईद का त्यौहार आपसी भाई-चारे से सौहार्दपूर्ण वातावरण में मनाने एवं त्यौहारों के सफल आयोजन के लिए जिला कलक्टर एवं जिला मजिस्ट्रेट शुभम चौधरी एवं पुलिस अधीक्षक ममता गुप्ता की अध्यक्षता में शुक्रवार को कोतवाली थाना परिसर गंगापुर सिटी एवं कलेक्ट्रेट सभागार सवाई माधोपुर में शांति समिति के सदस्यों, प्रबुद्धजनों एवं विभिन्न संगठनों की बैठक आयोजित हुई। जिला कलक्टर ने गंगापुर सिटी एवं सवाई माधोपुर में सभी सदस्यों से आह्वान किया कि सभी पर्व और त्यौहार शांति, सौहार्द और भाईचारे के साथ मनाते हुए सामाजिक समरसता की मिसाल पेश करें और जिला प्रशासन को पूरा सहयोग दें। उन्होंने सभी लोगों से कहा कि सवाई माधोपुर एक शांतिप्रिय शहर है, हमारा कर्तव्य है कि शहर में आगामी पर्वों का सौहार्द्रपूर्ण आयोजन हो और सकारात्मक संदेश जाए। उन्होंने शांति समिति के सदस्यों से कहा कि युवा पीढ़ी को समझाए कि वह सोशल मीडिया पर गलत पोस्ट न करें। वहीं आगामी त्यौहारों होली व ईद के मध्यनजर नालियों व प्रमुख चौराहों पर साफ-सफाई व्यवस्था दुरस्त रखने के निर्देश नगर परिषद आयुक्त को प्रदान किए । इसके साथ ही उन्होंने गंगापुर सिटी में मुख्य मार्गो से अतिक्रमण हटवाने, रोड़ लाईटों को सुचारू करने, पार्किंग व्यवस्था दुरस्त करवाने, सीवरेज लाईनों की सफाई करवाने के साथ-साथ पेयजल की नियमित सप्लाई सुनिश्चित करने के निर्देश एसडीएम को प्रदान किए। आपत्तिजनक पोस्ट की दें पुलिस को जानकारी– जिला पुलिस अधीक्षक ममता गुप्ता ने कहा कि किसी भी प्रकार की अवांछित गतिविधि, सोशल मीडिया पर आपत्तिजनक या भड़काऊ पोस्ट आदि के बारे में तत्काल पुलिस और प्रशासन को सूचित करें, संबंधित पर तत्काल कार्रवाई की जाएगी। आसामाजिक तत्वों को बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। उन्होंने बैठक में कानून व्यवस्था को लेकर कई अहम बिंदुओं पर सभी से चर्चा की और कहा कि शहर में शांतिपूर्ण ढंग से आयोजनों की परिपाटी को बरकरार रखें। बैठक में अतिरिक्त जिला कलक्टर रामकिशोर मीणा, अतिरिक्त जिला कलक्टर संजय शर्मा, उपखण्ड अधिकारी अनूप सिंह, नगर परिषद आयुक्त नरसी मीणा सहित शांति समिति सदस्य, प्रबुद्धजन उपस्थित रहे।

बेटियों को लाडो प्रोत्साहन योजना की किस्त का भुगतान

जिले में 6 हजार 409 बालिकाओं को 1 करोड़ 60 लाख 22 हजार 500 रुपए का हस्तांतरण

बढ़ता राजस्थान

सवाई माधोपुर (राकेश शर्मा)। स्कूल में पढ़ने वाली बेटियों को लाडो प्रोत्साहन योजना के तहत किस्तों का भुगतान शाला दर्पण के माध्यम से किया जा रहा है। लेखानुदान घोषणा 2024-25 के अनुसार गरीब परिवारों की बालिकाओं के लिए जन्म पर एक लाख रुपए का सेविंग बॉन्ड प्रदान करने के लिए अगस्त 24 को लाडो प्रोत्साहन योजना लागू की गई। जिसके तहत प्रथम कक्षा में प्रवेश लेने वाली बेटियों को लाभ दिया जा रहा है। बालिका के प्रति सकारात्मक सोच एवं बालिका विकास सुनिश्चित करने की दृष्टि से बालिका के जन्म पर एक लाख रुपए की राशि का संकल्प पत्र प्रदान किया जाएगा। स्कूल शिक्षा विभाग की ओर से तीसरी से छठी किस्त तक का भुगतान किया जाएगा।

ऑनलाइन बैंक खाते में जमा होगी राशि

संपूर्ण भुगतान 7 किस्त के रूप में डीबीटी के माध्यम से ऑनलाइन किया जाएगा। बालिका के व्यस्क होने तक पहली किस्तें बालिका के माता-पिता या अभिभावक के बैंक खाते में एवं सातवी किस्त बालिका के बैंक खाते में ऑनलाइन जमा करवाई जाएगी।

सीएमएचओ डॉ. अनिल कुमार जैमिनी ने बताया कि लाडो प्रोत्साहन योजना प्रारंभ होने से फरवरी, 2025 तक जिले में कुल 6 हजार 409 लाडो योजना से लाभांवित बालिकाओं को 1 करोड़ 60 लाख 22 हजार 500 रुपए की राशि का हस्तांतरण किया जा चुका हैं।

लाडो में समाहित राजश्री योजना

आदेशानुसार राजश्री योजनों को लाडो योजना में समाहित कर दिया गया है। राजश्री योजना की आगामी किस्त का लाभ पात्रता अनुसार लाडो प्रोत्साहन योजना के तहत दिया जाएगा।

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस आज

सवाई माधोपुर जिले में नारी ही सर्वशक्तिमान

कृष्णा शर्मा
(मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी)

शुभम चौधरी
(IAS) जिला कलेक्टर

ममता गुप्ता
(IPS) एसपी

सम्पत पहाड़िया
(प्रधान, चौथ का बरवाड़ा),

सुदामा मीणा
(जिला प्रमुख),

निरमा मीणा
(प्रधान)

मंजू गुर्जर
(प्रधान)

सीमा शर्मा
(सहायक अभियंता)

बढ़ता राजस्थान

सवाई माधोपुर (राकेश शर्मा)। स्त्री शरीर का नाम नहीं है। दिव्यता, वात्सल्य, माधुर्य, पोषण और निर्माण की क्षमता स्त्री है। सूक्ष्म में जीना केवल स्त्री ही जानती है। स्त्री मन की भाषा समझती है। समाज और देश का निर्माण स्त्री ही कर सकती है। गौरतलब है कि शनिवार को अन्तरराष्ट्रीय महिला दिवस है।

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस ने विकसित और विकासशील देशों में महिलाओं के लिए एक नया वैश्विक आयाम ग्रहण किया है। इसी क्रम में देश में महिलाओं ने भी अब पुरुषों को हर क्षेत्र में काफी पीछे छोड़ना शुरू कर दिया है। एक समय था जब महिलाएं किसी भी क्षेत्र में आगे बढ़ाने में संकोच करती थी, लेकिन आज स्थिति इसके ठीक उलट है। बात चाहे विधायिका क्षेत्र की हो या फिर न्यायपालिका या कार्यपालिका की। तीनों क्षेत्रों में ही नारी शक्ति ने अपना वर्चस्व बनाना शुरू कर दिया है। कमोबेश सवाई माधोपुर जिले में भी नारी शक्ति ही अब सर्वशक्तिमान के रूप में उभरने लगी है। खास तौर पर सभी प्रशासनिक न्यायिक क्षेत्र में भी नारी शक्ति ही सर्वशक्तिमान पदों पर विराजमान है। इसी प्रकार जन प्रतिनिधियों में भी आधी आबादी ने अपना वर्चस्व कायम किया हुआ है । सवाई माधोपुर जिले में नारी शक्ति इस प्रकार विभिन्न पदों पर काबिज हैः शुभम चौधरी (IAS) जिला कलेक्टर, ममता गुप्ता (IPS) जिला पुलिस अधीक्षक, रूबी अंसार (RAS) सहायक कलेक्टर (स्थानांतरणधीन टोंक), सरोज बैरवा (RRDS) विकास अधिकारी जिला परिषद, कृष्णा शर्मा मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी, सीमा शर्मा सहायक अभियंता (पंचायत समिति चौथ का बरवाड़ा) कार्यरत हैं। इसी प्रकार न्यायिक क्षेत्र में मीनाक्षी जैन (judge Pocso act Sawai Madhopur), रेशमा खान (ADJ number w Gangapur city), भावना भार्गव (Additional district judge Sawai Madhopur), समीक्षा गौतम (secretary DLSA Sawai Madhopur, गार्गी चौधरी (ACJM Sawai Madhopur), अनीता चौधरी -(2) ACJM Gangapur city), राजवीर कौर (CJ & JM Sawai Madhopur), अनषिका दिनकर (CJ & JM bamanwas), सुनीता यादव (CJ & JM Gangapur city), सना खान (ACJ& M number v Gangapur city), मनीषा कुमारी Gram (nyayalay GGC), किरण किरण प्रजापत (Acj& JMNo v Sawai Madhopur) नताशा चौधरी (Acj & JM) व अनीता रजवानिया प्रमुख हैं। इसी प्रकार इंदिरा मीणा (MLA बामनवास है। वहीं जिला प्रमुख सुदामा मीणा, निरमा मीणा प्रधान सवाई माधोपुर, मंजू गुर्जर प्रधान गंगापुर सिटी व मेघा वर्मा नगर सभापति पद पर आसीन है।

जिला कलक्टर ने किया विभिन्न कार्यालयों का किया औचक निरीक्षण

बढ़ता राजस्थान

सवाई माधोपुर (राकेश शर्मा)। जिला कलक्टर शुभम चौधरी एवं पुलिस अधीक्षक ममता गुप्ता शुक्रवार को गंगापुर सिटी उपखण्ड के दौरे पर रही। उन्होंने उपखण्ड कार्यालय, तहसील कार्यालय, थाना कोतवाली का निरीक्षण करते हुए व्यवस्थाएं जांची। साथ ही रमजान, होली, रामनवमीं, ईद एवं आगामी त्यौहार पर सुरक्षा की दृष्टि से बालाजी चौक, खारी बाजार, सुभाष बाजार, नेहरू पार्क रोड़, ईदगाह चौराहा, ट्रक यूनियन का आकस्मिक निरीक्षण कर अतिक्रमण, ट्राफिक व्यवस्था, सुरक्षा व्यवस्था का जायजा लिया।

निरीक्षण दौरान जिला कलक्टर ने उपखण्ड कार्यालय गंगापुर सिटी की विभिन्न शाखाओं में संपादित किए जा रहे कार्यों की समीक्षा करते हुए प्रगति रिपोर्ट ली। साथ ही प्रभारी अधिकारी को फाइलों का उचित प्रबंधन रखने तथा समय पर निस्तारण करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि आमजन से जुड़े प्रकरणों में किसी भी प्रकार की अनावश्यक देरी ना तथा उचित प्रबंधन व कार्य कुशलता के साथ आमजन को समय पर राहत प्रदान किया जाए। उन्होंने उपखण्ड अधिकारी एवं तहसीलदार को निर्देशित किया कि कोर्ट केस में लंबी-लंबी डेट्स ना देकर केस का समय पर निपटारा करें एवं अपने अधीनस्थ कार्यालयों का नियमित रूप से निरीक्षण करें।

उन्होंने उपखण्ड अधिकारी एवं तहसीलदार के राजस्व न्यायालय में लंबित प्रकरणों की फाईलों की जांच कर 10 वर्ष से अधिक लंबित प्रकरणों के शीघ्र निस्तारण करने के निर्देश उपखण्ड अधिकारी एवं तहसीलदार को दिए। इस दौरान उन्होंने मर्ग रजिस्टर, दावा दरकास, अपील रजिस्टर, हथियार पंजिका, सूचना का अधिकार रजिस्टर, सतर्कता सहित पुराने पत्रावलियां देखी। उन्होंने लेण्ड कनवर्जन के प्रकरणों का 45 दिवस में निस्तारण करने, रास्तों के विवाद, सीमाज्ञान, इजराय, चारागाह भूमि से अतिक्रमण हटाने तथा न्यायालयों, लोकायुक्त, मुख्यमंत्री कार्यालय के प्रकरणों में जवाबनामा समय पर भिजवाने के निर्देश दिए। उन्होंने एलआर एक्ट में राजस्व वसूली करने, आंतरिक लेखा जांच दल के आक्षेपों में संबंधित कार्मिक से रिकवरी करने के निर्देश दिए।

तहसील कार्यालय का किया निरीक्षण–जिला कलक्टर ने तहसील कार्यालय गंगापुर सिटी का निरीक्षण कर तहसीलदार से गत वर्ष की राजस्व अर्जन के संबंध में जानकारी प्राप्त कर लंबित राजस्व प्रकरणों का जल्द से जल्द निस्तारण करते हुए आमजन को राहत प्रदान करने के निर्देश दिए। साथ ही उन्होंने कार्यालय में साफ़-सफाई व्यवस्था दुरुस्त करने के साथ-साथ व्यवस्थित रूप से कार्यालय का प्रबंधन करने के निर्देश दिए।

इस दौरान अतिरिक्त जिला कलक्टर रामकिशोर मीणा, एसीएम बृजेन्द्र मीणा, तहसीलदार बृजेश कुमार शिहरा सहित कार्यालय के कार्मिक उपस्थित रहे।

निःशुल्क कृत्रिम अंग एवं सहायक उपकरण वितरण दो दिवसीय शिविर आज से

बढ़ता राजस्थान

मालपुरा (कृष्णचन्द्र विजय)। मालपुरा पंचायत समिति सभागार में शनिवार व रविवार को जिला कलक्टर के आदेशानुसार व सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग भारत सरकार के दिशा निर्देशानुसवार विशेष योग्यजनो को कृत्रिम अंग एवं सहायक उपकरण वितरण शिविर का आयोजन किया जाएगा। उपखण्ड अधिकारी अमित कुमार चौधरी ने बताया कि शिविर के तहसीलदार एवं विकास अधिकारी प्रभारी होगें। शिविर में विशेष योग्यजनो के लिए कृत्रिम अंग एवं सहायक उपकरण जैसे माटरईज्ड, ट्राईसाइकिल, बैटरी आपरेटेड ट्राईसाइकिल, व्हील चेयर, वैशाखी, श्रवण यंत्र एवं छड़ी आदि का वितरण किया जाएगा।

विभिन्न पर्वों को देखते जिला मजिस्ट्रेट डॉ. सौम्या झा ने ड्यूटी मजिस्ट्रेट नियुक्त किए

बढ़ता राजस्थान

टोंक।

जिला मजिस्ट्रेट डॉ. सौम्या झा ने 13 मार्च को होलिका दहन, 14 को धूलंडी, 28 को जुमातुल विदा, 30 को चेटीचंड एवं 31 मार्च को ईदुलफितर के त्योहारों को देखते हुए जिले में कानून एवं शांति व्यवस्था बनाये रखने के लिए ड्यूटी मजिस्ट्रेट नियुक्त किये हैं।

जिला मजिस्ट्रेट डॉ. झा ने बताया कि उपखंड मजिस्ट्रेट टोंक को संपूर्ण शहरी क्षेत्र, तहसीलदार एवं कार्यपालक मजिस्ट्रेट टोंक को संपूर्ण ग्रामीण क्षेत्र, उपखंड मजिस्ट्रेट उनियारा को संपूर्ण शहरी क्षेत्र, तहसीलदार एवं कार्यपालक मजिस्ट्रेट उनियारा को संपूर्ण ग्रामीण क्षेत्र का ड्यूटी मजिस्ट्रेट नियुक्त किया गया है। इसी तरह उपखंड मजिस्ट्रेट निवाई को संपूर्ण शहरी क्षेत्र, तहसीलदार एवं कार्यपालक मजिस्ट्रेट निवाई को संपूर्ण ग्रामीण क्षेत्र, उपखंड मजिस्ट्रेट पीपलू को संपूर्ण शहरी क्षेत्र, तहसीलदार एवं कार्यपालक मजिस्ट्रेट पीपलू को संपूर्ण ग्रामीण क्षेत्र का ड्यूटी मजिस्ट्रेट नियुक्त किया है। इसी तरह उपखंड मजिस्ट्रेट देवली को संपूर्ण शहरी क्षेत्र, तहसीलदार एवं कार्यपालक मजिस्ट्रेट देवली को संपूर्ण ग्रामीण क्षेत्र, तहसीलदार एवं कार्यपालक मजिस्ट्रेट दूनी को संपूर्ण क्षेत्र, तहसीलदार एवं कार्यपालक मजिस्ट्रेट नगरफोर्ट को संपूर्ण क्षेत्र, उपखंड मजिस्ट्रेट टोडारायसिंह को संपूर्ण शहरी क्षेत्र, तहसीलदार एवं कार्यपालक मजिस्ट्रेट टोडारायसिंह को संपूर्ण ग्रामीण क्षेत्र एवं उपखंड मजिस्ट्रेट मालपुरा को संपूर्ण शहरी क्षेत्र तथा तहसीलदार एवं कार्यपालक मजिस्ट्रेट मालपुरा को संपूर्ण ग्रामीण क्षेत्र का ड्यूटी मजिस्ट्रेट नियुक्त किया गया हैं।

नगरपालिका में शामिल होते ही बृजलालनगर की बदलने लगी फिजां

स्वच्छ एवं सुन्दर देने लगा दिखाई, प्रतिदिन आने लगे सफाई कर्मचारी व संसाधन

बढ़ता राजस्थान

मालपुरा (कृष्णचन्द्र विजय)। नगरपालिका मालपुरा की सीमा विस्तार के बाद बृजलालनगर ग्राम पंचायत के मुख्य बृजलालनगर गांव को नगरपालिका में शामिल करने की अधिसूचना जारी होने व विधिवत रूप से नगरपालिका में शामिल होने के साथ ही बृजलालनगर की फिजां बदलने लगी।

स्वायत शासन विभाग की ओर से एक अधिसूचना जारी की गइ। इस अधिसूचना में नगरपालिका मालपुरा की सीमा विस्तार कर सीमा से सटी ग्राम पंचायत बृजलालनगर को समाप्त कर पंचायत के मुख्य गांव बृजलालनगर को नगरपालिका में शामिल कर लिया गया। बृजलालनगर के विधिवत रूप से नगरपालिका में शामिल होने के साथ ही यहां फिजा बदलने लगी। जहां ग्राम पंचायत में रहने के दौरान बृजलालनगर गंदगी में अम्बार में डूब चुका था लेकिन जैसे ही नगरपालिका में शामिल हुआ तो बदलाव स्पष्ट नजर आने लगा। अब बृजलालनगर के लिए दस सफाई कर्मचारी मय ट्रेक्टर व कचरा वाहन के साथ लगा दिए गए। बृजलालनगर में अब प्रतिदिन सफाई कर्मचारी मय संसाधनो के आ रहे हैं। प्रतिदिन सड़को व नालियो की सफाई हो रही है। एकत्रित कचरा भी ट्रेक्टर अथवा कचरा वाहन ले जा रहे हैं। ऐसा होने से बृजलालनगर स्वच्छ एवं सुन्दर दिखाई देने लगा है।

इनका कहना है : इस संबंध में नगरपालिका मालपुरा के कार्यवाहक अधिशासी अधिकारी व उपखण्ड अधिकारी अमित कुमार चौधरी ने बताया कि बृजलालनगर को नगरपालिका मालपुरा की सीमा में शामिल कर लिया गया है। सोशल मीडिया पर बृजलालनगर में गंदगी के ढेर लगे होने की जानकारी आते ही तुरन्त प्रभाव से बृजलालनगर के लिए दस सफाई कर्मचारी मय ट्रेक्टर व एक कचरा वाहन को लगा दिया गया है। सफाई कर्मचारी प्रतिदिन मय सफाई संसाधनो से बृजलालनगर में पहुंच कर सफाई करेगें, ट्रेक्टर से हाथो हाथ कचरा उठाया जाएगा। यदि फिर भी कचरा बाकी रह जाता है तो एक कचरा वाहन बृजलालनगर की गली गली घूम कर कचरा एकत्रित करेगा।

उपमुख्यमंत्री प्रेमचन्द बैरवा ने विश्व ग्लूकोमा जागरूकता सप्ताह पोस्टर का किया विमोचन

बढ़ता राजस्थान

जयपुर, (का.स.)। राजस्थान ओप्थलमोलोजिकल सोसाइटी द्वारा आगामी 9 से 15 मार्च तक जनजागरूकता हेतु विश्व ग्लूकोमा सप्ताह का आयोजन किया जा रहा है। ग्लूकोमा से होने वाली अन्धता से बचाने के लिए प्रदेश के आमजन में जागरूकता लाने की जनता के लिए ग्लूकोमा जागरुकता पोस्टर का विमोचन किया गया।सोसाइटी के सचिव डॉ हर्षल टांक ने बताया कि देश भर में 40 वर्ष की ऊपर की आबादी में करीब 60 से 65 लाख लोग ग्लूकोमा की बीमारी से जूझ रहे हैं। ग्लूकोमा से पीड़ित अधिकांश लोगो को इस बीमारी का पता बहुत देर से चलता है। समय पर बीमारी का पता चल जाने पर इसका आसान उपचार सम्भव है।

भाईचारे, सौहार्दपूर्ण वातावरण व शांति से मनाए त्यौंहार: पुलिस अधीक्षक

पुराने मामले को भूलकर नई सोच व नए विचारो को दिल में रखे : जिला कलक्टर

बढ़ता राजस्थान

मालपुरा (कृष्णचन्द्र विजय)। पुलिस थाना मालपुरा में शुक्रवार को आगामी त्यौंहारो को लेकर जिला कलक्टर व पुलिस अधीक्षक सहित अन्य उच्चाधिकारियो की मौजुदगी में शांति समिति एवं सामुदायिक समन्वय समिति की बैठक आयोजित हुई।

बैठक में मौजुद शहर के प्रबुद्धजनो को सम्बोधित करते हुए जिला पुलिस अधीक्षक विकास सांगवान ने कहा कि आगामी सभी त्यौंहार मिलजुलकर, भाईचारे एवं सौंहार्दपूर्ण वातारण में शाति एवं कानून की पालना करते हुए मनाऐं। सांगवान ने कहा कि आगामी दिनो में रंगो का पर्व होली एवं धुलंडी सहित भारतीय नववर्ष, ईद, चेटीचंड सहित अन्य कई त्यौंहार व पर्व मनाए जाने हैं। इन सभी पर्वों की खुशियो में शामिल होकर भाईचारे का संदेश पूरे प्रदेश की जनता को देने का प्रयास करें। जिला कलक्टर डॉ. सौम्या झा ने कहा कि सम्पूर्ण प्रशासन त्यौंहारो की खुशियो को दोगुना कर त्योहारो की खुशियो को एक दूसरे में बांटकर अच्छे वातवरण में त्यौंहारो को मनाऐं। एडीएम विनोद मीणा ने बताया कि मालपुरा के लोग अच्छे एवं समझदार है। उन्होंने कहा कि आम जन को पुरानी बातो को भूलकर मालपुरा शहर में भाईचारे, सौंहार्द की नई इबारत लिखने का प्रयास किया जाए। उपखण्ड अधिकारी अमित कुमार चौधरी ने कहा कि मालपुरा का सम्पूर्ण प्रशासन आगे आने वाले त्यौंहारो व पर्वो को उत्साह उमंग व परम्परा के साथ मनाए जाने को लेकर कृत संकल्प लेकर कार्य योजना बना चुका है। बैठक में जलदाय विभाग के अधिकारियो ने बताया कि धुलंडी के दिन नियमित सप्लाई के अलावा धुलंडी मनाए जाने वाले क्षेत्रो में दोपहर 12.30 बजे पानी की अतिरिक्त सप्लाई होगी। वहीं ईद पर्व पर भी सम्बन्धित क्षैत्र में सुबह 7.30 बजे की अतिरिक्त सप्लाई होगी। वहीं बैठक में मोजुद अधिकतर लोगो ने शहर की बिगड़ी विद्युत सप्लाई व्यवस्था को लेकर आक्रोश

प्रकट कर सुधार की मांग रखी। बैठक में बशीर अहमद, मरगूब अहूमद, ईस नकवी, मुंशी खान बेलिम सहित अन्य ने ईद पर्व पर नियत समय पर पेयजल सप्लाई करवाने, रमजान के दौरान शहर की स्ट्रीट लाइटो को दुरूस्त करवाने, जामा मस्जिद, ईदगाह मैदान सहित अन्य मस्जिदो के आसपास बेहतर साफ सफाई करवाने की मांग रखी। इधर एडवोकेट राजकुमार जैन, गोविन्द बाबूजी, कृष्णकांत जैन रमाकान्त पाठक व अन्य ने होली, धुलंडी, भारतीय नववर्ष आयोजन, गणगोर मेला, चेटीचंड पर्व व अन्य आने वाले त्यौंहारो व पर्वो को लेकर विचार रखे। अंत में थानाधिकारी चेनाराम बेड़ा ने सभी का आभार प्रकट किया। बैठक में एएसपी मोटाराम बेनीवाल, डीवाईएसपी आशिष प्रजापत , भाजपा शहर मंडल अध्यक्ष जिनेन्द्र मेन्दवास्या, सहित क्षैत्र के अन्य सभी थानो के थाना प्रभारी के अलावा भारी संख्या में शहर के प्रबुद्धजन मोजुद रहे।

बाजार बंद कर व्यापारियों ने प्रशासन पर लगाया मनमानी का आरोप

बढ़ता राजस्थान

मेंहदीपुर बालाजी (भरत सिंह)। मेंहदीपुर बालाजी में शुक्रवार को उपखंड प्रशासन द्वारा अस्थाई अतिक्रमण हटाने की कारवाई हुई जिसमे प्रशासन को व्यापारियों के विरोध का समाना करना पड़ा ।अतिक्रमण हटाने के दौरान व्यापारी बाज़ार बंद धरने पर बैठ कर प्रशासन का विरोध जताया। इस दौरान श्रद्धालुओं को भारी परेशानी का सामना करना पड़ा । दरअसल होली महोत्सव पर अत्यधिक भीड़ बढ़ने की आशंका के चलते सिकराय उपखण्ड प्रशासन द्वारा को अस्थाई अतिक्रमण हटाने की कार्रवाई शुरू की गई।

व्यापारियों ने बताया कि पूर्व में ग्राम पंचायत मीना सीमला और उदयपुरा पंचायत द्वारा नालियों तक निशान लगाकर दुकानों की सीमा निर्धारित की गई थी, जिसके बाद सभी दुकानदार तय निर्धारित सीमा के अंदर ही सामान रखकर दुकान चला रहे हैं। इसके बावजूद प्रशासन द्वारा व्यापारियों को बेवजह परेशान किया जा रहा है वही व्यापारियों ने प्रशासन के खिलाफ नारेबाजी कर बाजार बंद कर दिया।

अनिश्चितकालीन बाज़ार बंद की चेतावनी : करोडीमल धर्मशाला में व्यापार मंडल की बैठक आयोजित हुई। जिसमे तय सीमा के बहार टेबल , कुर्सी , जनरेटर , तीरपाल , सहित अन्य सामना रखकर जो अतिक्रमण कर रखा है वह दुकानदार स्वमं अतिक्रमण हटाकर प्रशासन संग अपनी भागीदारी निभायेंगे का निर्णय लिया गया वही बैठक में दुकानदारों ने तय सीमा के बहार ठेले लगवाने, टेबल, कुर्सी सहित किसी प्रकार का अतिक्रमण नही करने और यातायात सुधार के लिये यात्री वाहन, सवारी वाहन को सरकारी पार्किंग पर रोका जाने का का प्रस्ताव लिया गया। इससे बाद एसडीएम डॉ नवनीत कुमार को व्यापार मंडल ने ज्ञापन सौंपा है । वहीं व्यापारियों ने मांगें नहीं मानने पर अनिश्चितकालीन के बाज़ार बंद की चेतावनी दी है । भाजपा नेता विजेन्द्र सीमला और व्यापार मंडल के अध्यक्ष गोपाल सिंह ने कहा कि जो भी दुकानदार तय सीमा के बहार ठेले , टेबल सहित अन्य सामग्री लगाकर अतिक्रमण करता पाया जाता है तो पंचायत के साथ व्यापार मंडल अतिक्रमणकारियों से जुर्माना वसूले के साथ समान ज़ब्त की कारवाई करेगा । ग़ौरतलब है कि दुकानदारों ने नालियों के बहार सड़क सीमा मे सामान रखकर या अस्थाई अतिक्रमण किया हुआ है जिससे यातायात संचालन प्रभावित होने के साथ मेहंदीपुर बालाजी दर्शनार्थ आने वाले श्राद्धलुओ को आवागमन ने परेशानी का सामना करना पड़ता । इस मौक़े पर दिनेश शर्मा, राजू सौखरी, हिम्मत सिह उदयपुरा,अशोक सिंह, प्रकाश कानपुर, राजकुमार शर्मा, बनवारी बेरोज, श्याम ऊकेरी , ओमी गोस्वामी, राजेश चूडी , सत्यनारायण सेठी, भगवत शर्मा, राकेश सेठी, मोनू सेड्या,अन्नी शर्मा सहित सैकड़ों लोग मौजूद रहे ।

पुलिस अधिकारियों की अपराध समीक्षा बैठक का आयोजन

बढ़ता राजस्थान

कोटपूतली (बिल्लूराम सैनी)। स्थानीय जिला पुलिस अधीक्षक कार्यालय में शुक्रवार को एसपी राजन दुष्यंत की अध्यक्षता में पुलिस अधिकारियों की अपराध समीक्षा बैठक का आयोजन किया गया। बैठक में एसपी राजन दुष्यंत ने पेंडिग प्रकरणों का अधिक से अधिक निस्तारण कर पेंडेंसी कम करने, पोक्सो व बलात्कार महिला अत्याचार व एस.सी/एस.टी के प्रकरणों का प्राथमिकता के आधार पर शीघ्र निस्तारण करने, आपराधिक प्रवृति के अपराधियों को चिन्हित कर गुण्डा एक्ट व राजपासा के तहत प्रभावी कार्यवाही करने तथा विभिन्न प्रकरणों में वांछित अपराधियों की धरपकड़ कर उन्हें गिरफ्तार करने के निर्देश दिये। एनडीपीएस एक्ट एवं साईबर अपराध की तुलनात्मक स्थिति की समीक्षा करते हुये उक्त अपराधों में कमी लाने के निर्देश दिये। सोशल मीडिया पर अवैध हथियारों के साथ पोस्ट करने वालों के विरूद्ध प्रभावी कार्यवाही करने के निर्देश दिये। एसपी ने थानाधिकारियों को अपने-अपने क्षेत्र में रात्रि गश्त, नाकाबंदी व चैकिंग को बढ़ाया जाकर सम्पति संबधी अपराध के प्रकरणों में सफलता हांसिल करने के निर्देश दिये। जिले में आगामी त्यौहारों व मेलो को देखते हुये कानुन व्यवस्था के संबध में चर्चा कर आवश्यक दिशा निर्देश प्रदान किये। एसपी ने लंबित मामलों के निपटारे पर विशेष जोर दिया। साईबर अपराध, एनडीपीएस एक्ट और गुंडा एक्ट के तहत कार्यवाही की समीक्षा की। राजपास के अंतर्गत विभिन्न अपराधियों की गिरफ्तारी पर भी चर्चा की। एसपी ने सोशल मीडिया पर अवैध हथियारों के साथ फोटो या वीडियो पोस्ट करने वालों के खिलाफ सख्त कार्यवाही के निर्देश दिये। पुलिस अधिकारियों को ऐसे लोगों पर कड़ी नजर रखने को कहा।

दिल्ली पब्लिक वर्ल्ड स्कूल में शिक्षक विनिमय कार्यक्रम आयोजित

बढ़ता राजस्थान

कोटपूतली(बिल्लूराम सैनी)। पनियाला मोड़ स्थित दिल्ली पब्लिक वर्ल्ड स्कूल में शुक्रवार को हंगरी देश से आई शिक्षिकाएं सुश्री जूलिया और सुश्री एल्जा ने विनिमय कार्यक्रम के तहत यहां के शिक्षण विधियों, कक्षा प्रबंधन तकनीकों एवं प्रारंभिक शिक्षा पद्धतियों को बारीकी से समझा। कार्यक्रम का उद्देश्य संस्कृति और शिक्षण कौशल में सुधार के साथ छात्र-केंद्रित शिक्षा को बढ़ावा देना था। हंगेरियन शिक्षिकाओं ने भारतीय शिक्षा प्रणाली के फोनेटिक्स-आधारित साक्षरता, अनुभवात्मक शिक्षा और मूल्य-आधारित शिक्षण का अवलोकन किया। उन्होंने खेल-आधारित शिक्षण और समग्र विकास रणनीतियों से जुड़े अपने अनुभव भी साझा किए। इसके अलावा शिक्षण रणनीतियों में सुधार, नवीन शिक्षण विधियों की आपसी समझ, संस्कृति और शैक्षिक आदान-प्रदान, वैश्विक शिक्षण दृष्टिकोण को अपनाने, शिक्षकों को अंतरराष्ट्रीय स्तर की शिक्षा सीखने, छात्र-केंद्रित शिक्षा-शिक्षण को अधिक प्रभावी और समावेशी बनाने पर जोर दिया गया। कार्यक्रम के अंत में दोनों देशों के शिक्षकों ने संयुक्त पाठ्य योजना और सतत ज्ञान साझाकरण के प्रति रुचि व्यक्त की। प्रधानाचार्या बिंदु सांगवान ने इसे वैश्विक शिक्षा सहयोग की दिशा में एक प्रेरणादायक कदम बताया, जो शिक्षकों और छात्रों दोनों के लिए लाभदायक सिद्ध होगा।

5 दिवसीय योग साधना शिविर आज से

बढ़ता राजस्थान

उदयपुर (दिनेश गोठवाल)। योग सेवा समिति उदयपुर द्वारा समिति परिसर में योग गुरू डॉ.सुन्दर लाल दक की आठवीं पुण्यतिथि पर निशुल्क पाँच दिवसीय योग साधना शिविर 8 मार्च से प्रारम्भ होगा जो 12 मार्च तक चलेगा। शिविर प्रतिदिन प्रात: 7 से 8 बजे तक आयोजित होगा। समिति अध्यक्ष प्रेम दक ने बताया कि इस शिविर में सूक्ष्म क्रिया, आसन, प्राणायाम ,मुद्रा,बन्ध व ध्यान का अभ्यास स्वस्थ शरीर के लिए सही खान पान मन को शांत रखने के उपाय की जानकारी दी जाएंगी। शिविर में योगाचार्य विजय बहादुर यादव अपनी सेवायें देंगे। उन्होंने बताया 12 मार्च को ब्लड जांच शिविर व नि:शुल्क काढ़ा वितरण किया जायेगा।

प्रणिता तलेसरा को सोशल सर्विस एवं वूमेन एंपावरमेंट पर मिली मानद उपाधि

बढ़ता राजस्थान

उदयपुर (दिनेश गोठवाल)। विश्व संस्कृति एवं पर्यावरण संरक्षण आयोग द्वारा नई दिल्ली तीन मूर्ति भवन, प्रधानमंत्री संग्रहालय के जवाहर ऑडिटोरियम में अणुव्रत समिति उदयपुर की अध्यक्ष श्रीमति प्रणिता तलेसरा को सोशल सर्विस एवं वूमेन एंपावरमेंट पर मानद उपाधि (डॉक्टर) से सम्मानित किया गया। समारोह के मुख्य अतिथि वीर चक्र विजेता कर्नल तेजपाल सिंह, बेटी पढ़ाओ बेटी बचाओ की मुख्य भूमिका निभानें वाली रश्मि सिंह थी। एलेना टुटेजा एवं राकेश बेदी बॉलीवुड एक्ट्रेस, स्वाति मालीवाल मेंबर ऑफ़ राज्य सभा,डॉ पंकज कुमार सिंह कैबिनेट मिनिस्टर ऑफ़ दिल्ली, विनय सहस्त्र बुद्धे फॉर्मर एमपी राज्यसभा,महामंडलेश्वर गोपाल गिरी मठ के समक्ष सम्मानित किया गया। देश भर के 158 लोगों को अलग-अलग कार्यों के लिए डॉक्टर की उपाधि से सम्मानित किया गया।श्रीमती प्रणेता तलेसरा को इसमें संस्था द्वारा आजीवन सदस्यता दी गई।

कन्या महाविद्यालय में वार्षिकोत्सव एवं पारितोषिक वितरण समारोह आज

बढ़ता राजस्थान

कोटपूतली(बिल्लूराम सैनी)। कस्बे के डाबला रोड़ स्थित राजकीय कन्या महाविद्यालय में 08 मार्च शनिवार को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर वार्षिकोत्सव तथा पारितोषिक वितरण समारोह का आयोजन किया जायेगा। समारोह के मुख्य अतिथि प्रदेश के गृह राज्यमंत्री जवाहर सिंह बेढ़म होगें। जबकि अध्यक्षता विधायक हंसराज पटेल करेगें। वहीं विशिष्ट अतिथि के रूप में राजस्थान लोक सेवा आयोग के पूर्व सदस्य ब्रह्मसिंह गुर्जर, भाजपा ओबीसी मोर्चा के पूर्व प्रदेश महामंत्री एड. हीरालाल रावत शिरकत करेगें। कार्यक्रम में सांस्कृतिक प्रस्तुतियों के साथ-साथ वर्ष भर आयोजित विभिन्न प्रतिस्पर्धाओं में विजेता व बेहतर प्रदर्शन करने वाली छात्राओं को पुरुस्कृत भी किया जायेगा।

थाना प्रागपुरा की 03 वारदात सहित अन्य थाना क्षेत्र की दर्जनों वारदातों का खुलासा

नकबजन गैंग की एक ओर महिला सदस्य सरोज देवी गिरफ्तार

- गिरफ्तारशुदा तीन आरोपियो से चोरी के करीब 06 लाख रुपये कैश व करीब 15 लाख रुपये की ज्वैलरी बरामद
- आरोपियो ने थाना ईलाका नारायणपुर, विराटनगर, बानसूर में भी कई मकानो में रात्री के वक्त की है चोरी

बढ़ता राजस्थान

पावटा (सुशील कुमार बंसल)। पुलिस ने प्रागपुरा थाने क्षेत्र में हुई चोरी व नकबजनी की वारदातो का खुलासा करते हुए पूर्व में 04 मार्च को दो आरोपियों को गिरफ्तार किया था।

इसी क्रम में थाना प्रागपुरा पुलिस ने एक ओर आरोपी महिला सरोज देवी को गिरफ्तार करने में सफलता हांसिल की है। एसपी राजन दुष्यन्त ने बताया कि कोटपूतली-बहरोड़ जिला क्षेत्र के सूने मकानों में चोरी की वारदातों की सूचना मिल रही थी। वहीं विगत दिनों ईलाका थाना प्रागपुरा में भी रात्री के वक्त मकानो में तीन चोरी की घटनाये घटीत हुई थी। जिस पर पुलिस थाना प्रागपुरा ने घटना का खुलासा करते हुये दो आरोपियों अमीचन्द सैनी उर्फ अमित व विजय गोठवाल उर्फ लाला को गिरफ्तार कर 04 मार्च को घटना क्रम का खुलासा किया था। इसी कड़ी में शुक्रवार 07 मार्च को पुलिस ने मामले संलिप्त एक ओर आरोपी महिला सरोज देवी को गिरफ्तार कर गिरफ्तारशुदा आरोपियो अमीचन्द सैनी उर्फ अमित, विजय गोठवाल उर्फ लाला व सरोज देवी से प्रागपुरा पुलिस ने करीब 06 लाख रुपये नगद व करीब 15 लाख रुपये की ज्वैलरी बरामद की है। आरोपियो से अन्य प्रकरणो में भी चोरी किये रुपये व ज्वैलरी की बरामदगी के प्रयास जारी है। प्रागपुरा थाना प्रभारी किरण सिंह ने बताया कि थाना ईलाके में पिछले दिनों करीब 3-4 माह में तीन मकानो में रात्री के वक्त ताला तोड़कर चोरी की घटनाये कारित की गई। जिस पर स्थानीय पुलिस थाने में प्रकरण दर्ज कर टीमों का गठन कर गिरफ्तार आरोपियों अमीचन्द सैनी उर्फ अमित, विजय गोठवाल उर्फ लाला व सरोज देवी से चोरी किये हुये करीब 06 लाख रुपये व करीब 15 लाख रुपये की ज्वैलरी बरामद की जा चुकी है।

आरोपियो से अनुसंधान जारी है जिनसे अन्य प्रकरणो में चोरी की गई ज्वैलरी व कैश राशि भी बरामद होने की सम्भावना है। पुलिस ने बताया कि आरोपियो द्वारा ईलाका थाना नारायणपुर, विराटनगर, बानसूर में भी कई मकानो में रात्री के वक्त चोरी की वारदातों को अंजाम देना बताया है।

ग्राम भांकरी से खाटू धाम के लिये पदयात्रा रवाना शोभा यात्रा पर जगह-जगह पुष्प वर्षा कर स्वागत

बढ़ता राजस्थान

पावटा (सुशील कुमार बंसल)। कस्बे के ग्राम भांकरी में खाटू धाम के लिये श्री श्याम बाबा की विशाल शोभा यात्रा गुरूवार को श्री श्याम गोपाल मण्डल के सानिध्य में बड़े ही धूमधाम व हर्षोल्लास के साथ निकाली गई।

समाज सेवी भूपेन्द्र गढ़वाल ने बताया कि भांकरी के श्री श्याम मंदिर स्थित ग्राम भांकरी के प्रमुख मार्गों से निकली इस शोभा यात्रा का जगह-जगह श्रद्धालुओं ने पुष्प वर्षा कर स्वागत किया। उन्होंने ने बताया कि पदयात्रा में श्रद्धालु डीजे की धुनों पर नाचते कूदते हुए खाटू नरेश की जय जयकार लगाते हुए चल रहे थे। श्रद्धालुओं ने बताया कि ग्राम भांकरी के श्री श्याम मंदिर महंत ने विधिवत पूजा अर्चना कर अखंड ज्योत व निशान पद यात्रा को श्री श्याम ध्वज दिखाकर धूमधाम व हर्षोल्लास से रवाना किया।

संघ के पदाधिकारियों ने बताया कि आगामी 10 मार्च को खाटू श्यामजी में ध्वज पताका चढ़ाकर क्षेत्र की सुख समृद्धि की कामना की जायेगी। इस दौरान बद्री धनकड़, लीलाराम धनकड़, रामेश्वर गढ़वाल, उघमी धनकड़, सुरेन्द्र धनकड़, मुरारी लाल, राकेश, गिर्राज, मदन, सीताराम, राजू, कबूल, प्रकाश, निक्की, हवासिंह, सरजीत, विजय, अजय सहित बड़ी संख्या में ग्रामीण मौजूद रहे।

ऐश्वर्या कॉलेज में विज्ञान प्रदर्शनी का आयोजन

बढ़ता राजस्थान

उदयपुर (दिनेश गोठवाल)। ऐश्वर्या कॉलेज में आज विज्ञान प्रदर्शनी का आयोजन किया। इस प्रदर्शनी का उद्देश्य विज्ञान के सभी क्षेत्रों में व्यावहारिक शिक्षा के महत्व को उजागर करना था। कुशल शिक्षकों के मार्गदर्शन में छात्रों ने विविध प्रकार के कार्यशील मॉडल प्रस्तुत किए, जो विभिन्न वैज्ञानिक सिद्धांतों और उनके अनुप्रयोगों को दर्शाते थे। प्रदर्शनी का शुभारंभ एमएमवीएम स्कूल के सम्मानित प्राचार्य योगेंद्र कटारे के करकमलों द्वारा किया गया। उन्होंने विशिष्ट मानदंडों के आधार पर प्रस्तुत मॉडलों का मूल्यांकन किया और छात्रों के प्रयासों की सराहना की। इस प्रदर्शनी में छात्रों ने वैज्ञानिक सिद्धांतों की अपनी समझ का प्रदर्शन करते हुए व्यावहारिक और कार्यात्मक परियोजनाएँ प्रस्तुत कीं। प्रदर्शनी के अंत में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले छात्रों को सम्मानित किया गया। प्रथम स्थान पर शुभम वर्मा, जबकि महेश रेगर और ज्योति गायरी ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। तृतीय स्थान राजल शक्तावत और सनय उपाध्याय को मिला। ऐसी प्रदर्शनियाँ न केवल विज्ञान की गहरी समझ को बढ़ावा देती हैं, बल्कि छात्रों को नवाचार और रचनात्मकता के प्रति प्रेरित भी करती हैं। कॉलेज की प्राचार्य डॉ ऋतु पालीवाल ने छात्राओं को उनकी उत्कृष्ट उपलब्धियों और इस प्रतिष्ठित प्रतियोगिता में शानदार प्रदर्शन के लिए हार्दिक बधाई दी।

कोटपूतली शहर में ही बने जिला कलेक्टर व एसपी के कार्यालय

अनुदान मांगों पर बहस के दौरान विधानसभा में बोले विधायक हंसराज पटेल

बढ़ता राजस्थान

कोटपूतली (बिल्लूराम सैनी)। क्षेत्रीय विधायक हंसराज पटेल ने शुक्रवार को विधानसभा में अनुदान मांगों पर बहस के दौरान नवगठित जिला कोटपूतली-बहरोड़ के जिला मुख्यालय कोटपूतली शहर में ही जिला कलेक्टर व जिला पुलिस अधीक्षक के कार्यालय बनाये जाने की मांग उठाई। स्वायत्त शासन विभाग से जुड़े विषयों को सदन के पटल पर रखते हुये विधायक पटेल ने कहा कि कस्बे के पंचायत समिति के पास खाली पड़ी दस बीघा सरकारी भूमि में आसानी से जिला कलेक्टर व जिला पुलिस अधीक्षक के कार्यालय बनाये जा सकते है। जिससे कस्बा सहित आसपास की जनता पैदल जाकर ही अपने कार्य कलेक्टर व एसपी से करवा सकते है। विधायक पटेल ने जिलों की समीक्षा में कोटपूतली-बहरोड़ जिले को यथावत् रखे जाने पर राज्य सरकार का आभार व्यक्त करते हुये कहा कि कांग्रेस शासन में कोटपूतली नगर पालिका को क्रमोन्नत कर नगर परिषद तो बनाया गया, परन्तु एक तरफ 04 किमी तो एक तरफ परिषद के क्षेत्र को 15 किमी तक बढ़ा दिया गया। जहाँ कांग्रेस नेताओं की हजारों बीघा जमीन थी। जिसके चलते नगर परिषद की सीमा को 15 किमी तक बढ़ाते हुये वहाँ जिला मुख्यालय हेतु मिनी सचिवालय व अन्य कार्यालयों की जमीन चिन्हित कर ली गई। विधायक पटेल ने इसे घोटाला करार देते हुये कहा कि इससे कोटपूतली की जनता को भारी परेशानी हुई है। क्योंकि कोटपूतली शहर में ही पंचायत समिति की 10 बीघा भूमि खाली पड़ी हुई है। जहाँ जिला कलेक्टर व एसपी के कार्यालय आसानी से बनाये जा सकते है। जिसका बहुत बड़ा लाभ आम जनता को मिलेगा। लोग पैदल चलकर ही जिला कलेक्टर व एसपी से मिलकर अपने कार्य करवा सकेगें। पटेल ने यह भी कहा कि इस विस्तारीकरण में लगभग 15 ग्राम पंचायतों को नगर परिषद में मिला लिय गया। इससे 15 सरपंच जिन्हें जनता ने चुना था, उन्हें ना तो नगर परिषद में सदस्य बनाया गया एवं ना ही उन्हें सरपंच रहने दिया गया। पटेल ने उन्हें वापिस ग्राम पंचायतें बनाकर सरपंच बनाने या फिर नगर परिषद में उन्हें पार्षद बनाये जाने की मांग की। साथ ही पटेल ने कोटपूतली की नारेहड़ा ग्राम पंचायत को नगर पालिका बनाने की मांग भी सदन में उठाई।

टैंकर एवं स्विफ्ट डिजायर की भिड़ंत होती होती बची बड़ा हादसा टला, मौके पर पहुंचा पुलिस प्रशासन

बढ़ता राजस्थान

कोटपूतली (बिल्लूराम सैनी)। जहां एक बार फिर बड़ा हादसा होते होते टल गया।कस्बे के दीवान होटल के सामने करीब शाम 4 बजे गैस से भरे एक टैंकर के आगे चल रही स्विफ्ट डिजायर गाड़ी को बचाने के चक्कर में टैंकर चालक ने गाड़ी को हाईवे के डिवाइडर पर चढ़ा दिया। जिससे बड़ा हादसा होते होते टल गया। सूचना पर एसएचओ राजेश शर्मा, डीएसपी राजेंद्र बुरडक मौके पर पहुंचकर क्रेन की सहायता से करीब 40 मिनट बाद टैंकर को हटवाया। ट्रैफिक हेड कांस्टेबल कैलाश चंद ने बताया कि जैसे ही टैंकर डिवाइडर से कूद कर हाईवे एक तरफ आने लगा तो उसने तुरंत आगे से आ रहे यातायात को रुकवाया अन्यथा बड़ा हादसा हो सकता था। हेड कांस्टेबल की इस सूझबूझ की चारों ओर तारीफ हो रही है। पुलिस प्रशासन क्रेन की सहायता से टैंकर को हटवाया जा रहा है। हालांकि टैंकर और डिजायर गाड़ी के दोनों चालक सुरक्षित हैं। घटना के बाद हाईवे पर लंबा जाम लग गया। मौके पर तैनात पुलिसकर्मियों ने कड़ी मशक्कत के बाद जाम को खुलवाया। किसी भी आपात स्थिति को देखते हुए पुलिस प्रशासन ने ट्रैफिक को रुकवा कर आसपास की दुकानों को बंद करवाया गया।

पुलिस दबिश के दौरान एक माह की बच्ची की मौत का मामला

दोषियों और अपराधियों को गिरफ्तार करो पर कन्याओं पर अत्याचार मत करो : रावत

बढ़ता राजस्थान

बानसूर (धीरज मौर्य)। अलवर जिले के रामगढ़ विधानसभा क्षेत्र के गाँव रघुनाथगढ़ तेलियावास में अपराधियों की धरपकड़ अभियान में एक माह की बच्ची की मौत का मामला तूल पकड़ता जा रहा है।मासूम बालिका की बेरहमी से कुचले जाने की कांग्रेस नेताओं ने निन्दा की है।इसको लेकर कांग्रेस के नेताओं घटना की जानकारी मिलने पर मुलाक़ात कर संवेदना प्रकट की है। इस मौके पर राजस्थान की शेरनी और पूर्व केबिनेट मंत्री शकुंतला रावत ने कहा कि हम अपराध और अपराधीयों का समर्थन नहीं करते। अपराधीयों को पकड़ो पर महिला शक्ति को मत कुचलो। हम इस घटना की निन्दा करते हैं। घटना की निष्पक्ष जाँच हो और दोषियों को सजा मिले यह हम मांग करते हैं।इस मौके पर कांग्रेस जिलाध्यक्ष योगेश मिश्रा, पूर्व विधायक बलजीत यादव, कांग्रेस प्रत्याशी रहे आर्यन जुबेर खान, नसरु प्रधान, अजीत यादव, रिपुदमन, बबली पंडित, पुष्पेंद्र धाबाई सहित काफ़ी संख्या में ग्रामीण मौजूद रहे।

क्या नगर पालिका कपासन क्षेत्र में अव्यवस्थित यातायात व्यवस्था कभी सुनियोजित हो पायेगी?

सीएलजी बैठक में उठा मुद्दा तो अधिकारियों ने संभाला मोर्चा

बढ़ता राजस्थान

कपासन (नि.स.)। क्षेत्रीय प्रशासनिक अधिकारियों सहित विभिन्न संगठनों के प्रतिनिधियों एवं पदाधिकारियों की उपस्थिति में गुरुवार सांय आयोजित सीएलजी बैठक में नगर की अव्यवस्थित यातायात व्यवस्था को लेकर हुई तीखी नोंकझोंक के बाद यातायात व्यवस्था को सुदृढ़ करने हेतु अधिकारियों का प्रयास बेअसर होता प्रतीत हो रहा है। जानकारी अनुसार पंचायत कपासन के सभागार में आगामी त्योंहारों को आपसी प्रेम एवं सौहार्द के साथ मनाने को लेकर उपखण्ड अधिकारी कपासन राजेश सुवालका,पुलिस उपाधीक्षक हरजीलाल यादव आदि क्षेत्रीय प्रशासनिक अधिकारियों,जनप्रतिनिधियों एवं गणमान्यजनों की उपस्थिति में सीएलजी बैठक का आयोजन किया गया।जिसमे नगर क्षेत्र में स्थित प्रतिष्ठान व्यापारियों द्वारा थैला वालो को प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से बढ़ावा देने की बात आई।जिस पर व्यापार मंडल अध्यक्ष कोमल बारेगामा द्वारा रोष व्यक्त किया गया।साथ ही व्यापार मंडल अध्यक्ष कपासन कोमल बारेगामा द्वारा नगर पालिका कपासन क्षेत्र की अव्यवस्थित यातायात व्यवस्था को लेकर विचार व्यक्त किये गये।सीएलजी बैठक में उक्त मुद्दे को लेकर तीखी नोंकझोंक बाद व्यापार मंडल कपासन के पदाधिकारी बैठक से उठकर चले गये। इसके उपरांत प्रशासनिक अधिकारीयो द्वारा मोर्चा संभालते हुवे नगर क्षेत्र के मार्गो का भ्रमण कर यातायात व्यवस्था को दुरुस्त करने का प्रयास किया गया।मगर इसके बाद भी क्षेत्रीय आमजन को यातायात अव्यवस्था से छुटकारा मिलता दिखाई नही दे रहा है।यहां प्रशासनिक अधिकारियों के आवागमन उपरांत यातायात व्यवस्था पुन: यथास्थिति में प्रवेश करती दिखाई दी।जिससे उक्त मुद्दा जनता जनार्दन के गलियारों में चर्चा का विषय बना रहा।जिसमे उक्त कार्यवाही अथक प्रयास की नहीं अपितु मात्र औपचारिकता की भेंट चढ़ती दिखाई दे रही है। कमोबेश नगर पालिका कपासन क्षेत्र की जनता जनार्दन के गलियारों में अब भी वही सवाल तीव्रता से भ्रमण करता दिखाई दे रहा है कि क्या कपासन में यातायात व्यवस्था कभी सुनियोजित हो सकेगी ? इधर सूत्रोनुसार व्यापार मंडल कपासन का एक प्रतिनिधि मंडल जिला पदाधिकारियों की अगुवाई में शुक्रवार को जिला मुख्यालय पहुंचकर जिला पुलिस अधीक्षक चित्तौड़गढ़ से भेंटकर वार्ता की है।हालांकि समाचार लिखे जाने तक उक्त भेंट वार्ता में क्या चर्चा हुई यह स्पष्ट नहीं हो पाया।

जब हर महिला सशक्त होगी तभी समाज भी सशक्त बनेगा

(अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर समाजसेविका, राष्ट्र सेवा समिति की सह कार्यवाह एवं चित्तौड़ अर्बन बैंक की एमडी वंदना वजीरानी से विशेष भेंट)

बढ़ता राजस्थान

चित्तौड़गढ़ (रेखा खाबिया)। समाजसेविका एवं चित्तौड़ अर्बन बैंक की एमडी वंदना वजीरानी ने अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर कहा कि आज के दौर में महिला दिवस सिर्फ महिलाओं के सम्मान तक सीमित नहीं रह गया है, बल्कि यह लैंगिक समानता, आर्थिक स्वतंत्रता और सामाजिक न्याय का प्रतीक बन गया है। आर्थिक स्वतंत्रता और उद्यमिता के बारे में उन्होंने कहा महिला उद्यमिता की वृद्धि भारत में 60 लाख से अधिक महिला उद्यमी हैं, लेकिन वे अभी भी कुल स्वस्थ (सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योग) का सिर्फ 20प्रतिशत ही संभालती हैं।

फिनटेक और डिजिटल बैंकिंग में भागीदारी : डिजिटल इंडिया पहल के तहत महिलाओं की वित्तीय समावेशन दर 77प्रतिशत तक बढ़ी है। राजनीतिक और सामाजिक सशक्तिकरण के बारे में श्रीमती वंदना कहती है कि 50प्रतिशत पंचायतों में महिलाओं का नेतृत्व: भारत में स्थानीय स्तर पर महिलाओं को आरक्षण मिलने से उनकी भूमिका बढ़ी है। महिला आरक्षण बिल (2023) पर वंदना जी कहते हैं कि इस बिल के तहत लोकसभा और विधानसभाओं में महिलाओं के लिए 33त्न सीटें आरक्षित की गई हैं। वजीरानी ने कहा कि महिला दिवस पर आत्मनिर्भरता और समानता की बात करना तो आम हो गया है, लेकिन महिलाओं के मानसिक स्वास्थ्य पर कम ही ध्यान दिया जाता है। भारतीय महिलाओं में 42प्रतिशत तक डिप्रेशन और एंग्जायटी के मामले बढ़े हैं। वर्क-लाइफ बैलेंस बनाए रखना एक चुनौती है, विशेष रूप से वर्किंग मदर्स के लिए। उन्होंने भारत की अनसुनी महिला नायक जिनके बारे में कम लोग जानते हैं इतिहास की किताबों में कुछ ही महिलाओं का नाम लिया जाता है, लेकिन असल में कई अनकही कहानियाँ भी हैं— इनके बारे में बताते हुए उन्होंने देवी अहिल्याबाई के उल्लेखनीय कार्यों के बारे में बताते हुए अन्य प्रमुख नेत्रियों के बारे में भी चर्चा की। वंदना ने कहा कि आयरन लेडी नान्गांगोशी ने 1950-60 के दशक में नागालैंड में महिलाओं की शिक्षा के लिए आंदोलन चलाया। नागा समाज में महिलाओं को समान अधिकार दिलाने में उनकी बड़ी भूमिका रही। दक्षिण भारत की पहली महिला इंजीनियर - ए. लक्ष्मीबाई 1940 के दशक में जब महिलाओं को इंजीनियरिंग में जगह नहीं मिलती थी, तब उन्होंने बैंगलोर में पहली महिला इंजीनियर बनने का गौरव प्राप्त किया।

सोशल मीडिया पर भ्रामक खबरों पर रखें विशेष ध्यान : जिला कलक्टर

त्योहारों को लेकर जिला कलेक्टर व एसपी सहित अधिकारियों की बैठक

बढ़ता राजस्थान

चित्तौड़गढ़ (रेखा खाबिया)। जिले में होली, धूलंडी, रंग तेरस, रमजान सहित विभिन्न त्योहारों पर शांति एवं सौहार्द बनाए रखने को लेकर जिला कलक्टर आलोक रंजन एवं जिला पुलिस अधीक्षक सुधीर जोशी ने आज डीओआईटी के वीसी कक्ष में अधिकारियों की बैठक ली एवं आवश्यक निर्देश दिए। जिला कलक्टर आलोक रंजन ने बैठक में अधिकारियों से कहा कि विभिन्न त्योहारों पर आपसी सौहार्द एवं शांति व्यवस्था बनाए रखने के लिए सोशल मीडिया पर प्रसारित होने वाली विभिन्न सूचनाओं पर साइबर क्राइम के माध्यम से नियंत्रण रखें एवं गलत सूचनाओं पर तत्काल आवश्यक कार्रवाई करें। जिला कलक्टर ने बैठक में भूमि आवंटन सहित विभिन्न प्रकरणों पर भी अधिकारियों से चर्चा की। उन्होंने आयोजित किए जा रहे हैं फार्मर रजिस्ट्री शिविरों की उपलब्धि की जानकारी भी ली। बैठक में जिला पुलिस अधीक्षक सुधीर जोशी ने भी जिले में त्योहारों पर शांति व्यवस्था के प्रयासों की जानकारी दी। इस दौरान सभी उपखण्ड अधिकारी भी वीसी के माध्यम से जुड़े। बैठक में अतिरिक्त जिला कलक्टर प्रभा गौतम, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक सरिता सिंह, अतिरिक्त जिला कलक्टर (भू.अ.) रामचंद्र खटीक, सीईओ जिला परिषद विनय पाठक, और अतिरिक्त जिला कलक्टर रावतभाटा विनोद मल्होत्रा, उपखण्ड अधिकारी बीनू देवल सहित संबंधित जिला स्तरीय उपस्थित रहें।

विधायक कार्यालय पर स्वास्थ्य सेमिनार की तैयारियों को लेकर बैठक आयोजित

आमजन स्वास्थ्य के प्रति जागरूक रहे : उत्तम माहेश्वरी

बढ़ता राजस्थान

भीलवाड़ा (अमित शर्मा)। शहर विधायक अशोक कोठारी के निर्देशानुसार आगामी स्वास्थ्य शिविर, विकास कार्यों तथा प्रदेश व केंद्र की जनकल्याण कारी योजनाओं की सूचनाओं के संदर्भ में विधायक कार्यालय पर भारत माता के चित्र पर माल्यार्पण कर बैठक का शुभारंभ किया गया। मीडिया प्रभारी पंकज आडवाणी ने बताया कि, विश्व प्रसिद्ध स्वास्थ्य वैज्ञानिक उत्तम माहेश्वरी ने संबोधित करते हुए कहा कि, आमजन को स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता रखनी चाहिए, संतुलित भोजन करने से ही शरीर को आवश्यक पोषक तत्व मिलते है, पारंपरिक घरेलू विज्ञान से सामान्य व दुर्लभ बीमारियों का उपचार भी आसानी पूर्वक कर स्वस्थ रह सकते है तथा आपने मानव के जीवन मे स्वास्थ्य का महत्व, स्वस्थ जीवनशैली के बारे में जानकारी प्रदान की व मानव को स्वास्थ्य के प्रति कैसे जागरूक करने की सलाह देते हुए स्वस्थ जीवनशैली अपनाने के लिए कार्यकर्ताओं को प्रेरित भी किया। सरोज देवी फाउंडेशन के सरंक्षक तिलोकचंद छाबड़ा, अध्यक्ष सौरभ छाबड़ा व प्राणिन फाउंडेशन की अध्यक्ष नेहा बहन पटेल द्वारा दिनांक 8 व 9 मार्च 2025 को तीन सत्र में सेमिनार आयोजित होगा, जिसमें पहला सत्र 8 मार्च शनिवार को शाम 5 बजे, दूसरा सत्र 9 मार्च रविवार को सुबह 10 बजे तथा तीसरा सत्र रविवार दोपहर 3:30 बजे आरसी व्यास स्थित मोदी ग्राउंड में आयोजित होगा। भाजपा के पूर्व जिलाध्यक्ष लादूलाल तेली ने लव जिहाद प्रकरण पर संबोधित करते हुए कहा कि, यह जो षड्यंत्र चल रहा है, इसको नजर अंदाज ना करते हुए अपनी सतर्कता रखनी चाहिए, परिवार को बच्चियों पर नजर रखने की बात कही, पूर्व जिला महामंत्री प्रदीप सांखला ने प्रदेश व केंद्र की जल कल्याण कारी योजना पर प्रकाश डाला। समाजसेवी कांतिलाल जैन ने कहा कि वस्त्रनगरी में यह नि:शुल्क स्वास्थ्य सेमिनार का होना स्वर्णिम अवसर है, ऐसा अवसर वस्त्रनगरी के लोगो को मिलना बहुत ही महत्वपूर्ण है। सेमिनार में भाग लेने वाले लाभार्थी कार्यक्रम में समय से 15 मिनट पूर्व पधारें। विधायक अशोक कोठारी ने विधानसभा सत्र के दौरान जयपुर प्रवास से ही आयोजित कार्यक्रम की अग्रिम बधाई शुभकामनाएं दी। संचालन बाबूलाल टाक ने किया। शम्भू वैष्णव ने आभार धन्यवाद व्यक्त किया। इस बैठक में उपमहापौर रामनाथ योगी, राकेश कोठारी, आनंद चपलोत, ज्ञानमल नाहर, कैलाश जीनगर, दीनबंधु खत्री, लक्ष्मी कंवर राणावत, एडवोकेट हंसराज यादव, बालूराम अग्रवाल, भवानी शंकर दुधानी, रघु नेनावटी, गोपाल बांगड़, संजय राठी, नोरत पानगढ़िया, सीमा जांगिड़, दुर्गालाल बारेठ, सुमित्रा पूर्बिया, चंद्रशेखर शर्मा, माया पूर्बिया, ओमप्रकाश व्यास, विजय सिंह पुरावत, बादल सिंह राठौड़, सत्येंद्र तिवारी, चेतन मानसिंहका, मनोज शर्मा, उत्तम सुखलेचा, सचिन, गौभक्त किशोर लखवानी, अमन शर्मा, पार्षद सागर पांडे, सूंदर लाल बम्बोड़ा, गजेंद्र सिंह राठौड़, छित्तर गैंगट, गिरेन्द्र मिश्रा, वीरेंद्र सिंह राजावत, दिनेश सुथार, प्रिंस जैन, हीरा सा गुर्जर सहित गणमान्य नागरिक उपस्थित थे।

आगामी पर्व सोहार्दपूर्वक मनाने हेतु कपासन में सीएलजी बैठक का आयोजन

बढ़ता राजस्थान

कपासन (नि.स.)। आगामी धार्मिक पर्व शांति एवं सोहार्दपूर्वक मनाने हेतु पंचायत समिति कपासन सभागार में सीएलजी बैठक का क्षेत्रीय प्रशासनिक अधिकारियों एवं जनप्रतिनिधियों की उपस्थिति में गुरुवार सांय आयोजन किया गया।जिसमे आगामी धार्मिक त्योंहार होली,शीतलाष्टमी,ईद उल फितर,चैत्रीय नवरात्रि, रामनवमी,महावीर जयंती आदि धार्मिक पर्वो को शांति एवं सोहार्दपूर्वक मनाने हेतु प्रशासनिक अधिकारियों द्वारा उपस्थित गणमान्यजनों से सुझावों के साथ विस्तृत चर्चा की गयी। इस दौरान उपखंड अधिकारी कपासन राजेश सुवालका,पुलिस उपाधीक्षक हरजीराम यादव, तहसीलदार नसीर बैग मिर्जा,थानाधिकारी रतन सिंह, मुख्य ब्लॉक चिकित्सा अधिकारी कपासन डॉ. महेंद्र कुमार शर्मा,नपा अध्यक्ष प्रतिनिधि आशीष सोनी,पूर्व नगर पालिका कपासन अध्यक्ष प्रतिनिधि ललित टांक, व्यापार मंडल अध्यक्ष कोमल बारेगामा,कांग्रेस नगर अध्यक्ष शंकरलाल प्रजापत,मुला माता मंदिर ट्रस्ट अध्यक्ष सत्यनारायण आचार्य,अंजुमन कमेटी सदर अशफाक तुर्किया,रतननाथ योगी,कांग्रेस नेत्री सुमन कुमावत,गौरव दाधीच,कांग्रेस सेवादल नगर अध्यक्ष भवानीशंकर लोहार,सूर्यप्रकाश सिरोया,शिवशंकर उपाध्याय,सैयद अख्तर अली,भूपेश गोठवाल,इब्राहिम, हजारीलाल खटीक,देवेंद्र त्रिपाठी,बलजीत कौर,छोटू वैष्णव,मुख्तियार पटेल,अभिषेक सोमानी,महेश चाष्टा, लक्ष्मण गुर्जर,साबिर कोतवाल सहित एएसआई सुभाष यादव,पुलिस चौकी सूचना प्रभारी जितेंद्र गुर्जर,रतन जाट आदि गणमान्यजन उपस्थित रहे।

जिला कलक्टर बने निक्षय मित्र, क्षय रोगियों को दी पोषण सहायता

बढ़ता राजस्थान

चित्तौड़गढ़ (नि.स.)। राष्ट्रीय क्षय उन्मूलन कार्यक्रम चित्तौडगढ के अन्तर्गत टीबी मरीजो के लिए सामुदयिक सहायता के माध्यम से बेहतर स्वास्थ्य एवं पोष्टिक आहार हेतु देषभर में निक्षय सम्बल योजना चलायी जा रही है। इसके अन्तर्गत जिला कलक्टर आलोक रंजन द्वारा डीओआईटी सभागार में आयोजित कार्यक्रम में टीबी रोगीयों को पोषण सामग्री कीट वितरण किए गए। इस दौरान जिला कलक्टर ने सभी राजकीय विभागो के जिला अधिकारीयों, कर्मचारियों, कॉर्पोरेट एवं जिले के उद्यमियों एवं जनमानस से निक्षय मित्र बनकर क्षय रोगियों की सहायता कर सामुदायिक जनभागिता निभाने की अपील की। श्रीमान मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ ताराचंद गुप्ता एवं जिला क्षय रोग अधिकारी डॉ राकेश कुमार भटनागर ने निक्षय मित्र बनकर टीबी रोगीयो को पोषण सामग्री कीट दे रहे है। जिला क्षय रोग अधिकारी डॉ राकेश कुमार भटनागर ने बताया कि कार्यक्रम के अन्तर्गत आयोजित टीबी मुक्त ग्राम पंचायत अभियान में जिले की 68 ग्राम पंचायतो को टीबी मुक्त घोषित किया गया है।

संभागीय आयुक्त ने किया जिला कलक्टर व रसद कार्यालय का वार्षिक निरीक्षण

बढ़ता राजस्थान

बूंदी (अनन्त दाधीच)। संभागीय आयुक्त राजेन्द्र सिंह शेखावत ने शुक्रवार को जिला कलक्टर व रसद कार्यालय का निरीक्षण कर व्यवस्थाओं का जायजा लिया। उन्होंने कलक्ट्रेट परिसर में स्थित विभिन्न अनुभागों, राजस्व रिकॉर्ड रूम का अवलोकन कर संबंधित अधिकारियों को आवश्यक दिशा निर्देश दिए। निरीक्षण के दौरान संभागीय आयुक्त ने निर्देश दिए कि आलोच्य अवधि की समाप्ति से पहले राजस्व मंडल की ओर से निर्धारित मापदण्डानुसार राजस्व वादों के पुराने प्रकरणों का निस्तारण सुनिश्चित किया जावें। अतिक्रमण के मामलों में राजस्व मण्डल द्वारा दिए गए निर्देशों के अनुसार कार्यवाही की जावे। गैर खातेदारी से खातेदारी अधिकार के बकाया प्रकरणों का निस्तारण जल्द करवाया जाए। वर्ष 2024-25 की समाप्ति से पूर्व राजस्व वसूली के लक्ष्य हासिल किए जाएं।

रोडा एक्ट व एलआर एक्ट के प्रकरणों में बैंक अधिकारियों से समन्वय स्थापित कर वसूली की कार्यवाही की जाए। संभागीय आयुक्त ने निर्देश दिए कि संपर्क पोर्टल पर लंबित प्रकरणों का जल्द निस्तारण किया जावें। उन्होंने रसद कार्यालय के निरीक्षण के दौरान जिला रसद अधिकारी को निर्देश दिए कि पात्र परिवारों को आवंटित गेंहू का समुचित उठाव सुनिश्चित किया जाकर नियमानुसार वितरण करवाया जावें एवं वितरण पर समुचित निगरानी रखी जाए। प्रवर्तन स्टाफ से विभाग द्वारा निर्धारित मापदण्ड के अनुसार गुणात्मक एवं प्रभावी निरीक्षण करवाना सुनिश्चित किया जावें। उन्होंने निर्देश दिए कि रिक्त/अतिरिक्त नवसृजित उचित मूल्य दुकानों के लिए साक्षात्कार प्रक्रिया पूर्ण कर शीघ्र संचालन हेतु प्राधिकार पत्र जारी करने की कार्यवाही की जावें।उन्होंने आधार सीडिंग,ई-केवाईसी, ऑडिट आक्षेप आदि के बारे में जानकारी लेकर आवश्यक निर्देश दिए। निरीक्षण के दौरान जिला कलक्टर अक्षय गोदारा, जिला रसद अधिकारी शिवजीराम जाट आदि मौजूद रहे।

शिक्षक करते बालकों का सर्वांगीण विकास : आक्या

गुणवत्तापूर्ण शिक्षण ही शिक्षक की पहचान : आलोक रंजन

बढ़ता राजस्थान

चित्तौड़गढ़ (नि.स.)। एक शिक्षक ही विद्यालय में रहकर विद्यालय और गांव के बीच समन्वय स्थापित करते हुए बालकों का सर्वांगीण विकास करते हैं जिससे राष्ट्र उन्नति के पथ पर अग्रसर होता है। शिक्षक की इसी पद्धति के लिए उन्हें आज भी याद किया जाता है। उक्त विचार चित्तौड़गढ़ विधायक चन्द्रभानसिंह आक्या ने सातवीं ब्लॉक स्तरीय सत्रांत वाकपीठ के उद्घाटन अवसर पर व्यक्त किये। द्वितीय सत्र में जिला कलेक्टर चित्तौड़गढ़ आलोक रंजन ने अपने उद्बोधन में कहा कि बालकों में अन्य गुणवत्तापूर्ण शिक्षण एवं व्यवहार परिवर्तन हो इसके लिए शिक्षक अपने निर्धारित पाठयक्रम और शैक्षिक, सहशैक्षिक गतिविधियों से थोड़ा हट कर शिक्षण समय के अलावा भी अतिरिक्त समय देना होगा। कार्यक्रम में चित्तौड़गढ़ प्रधान देवेन्द्र कंवर, मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी प्रमोद दशोरा, जिला शिक्षा अधिकारी माशि कल्पना शर्मा उपस्थित थे। ब्लॉक सचिव किशनलाल सालवी ने बताया कि उद्घाटन अवसर पर स्वागत उद्बोधन मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी शम्भूलाल सोमानी ने दिया, जबकि द्वितीय सत्र में मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी प्रमोद दशोरा ने दिया। उद्घाटन अवसर पर पूर्व पार्षद अनिल ईनाणी, शैलेन्द्र झंवर, एडवोकेट ओमप्रकाश शर्मा, मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी शम्भूलाल सोमानी, वाकपीठ अध्यक्ष नारायणसिंह चुण्डावत मंचासीन रहे जिनका स्वागत आयोजक संस्था प्रधान ललिता खोईवाल, सुरेश खोईवाल, दिनेश सालवी, गणेश नारायण माली, कोषाध्यक्ष रविन्द्र बैरवा, हंसराज सालवी, रतनलाल सालवी, मुबारक खान, गोपाल स्वरूप त्रिपाठी, कालूराम खटीक, माधवलाल जटिया, नोसर जाट, इन्द्रा शर्मा, चन्दा तेली, दीप्ति चारण, मधु जैन, शिव गौड़, लीलाराम धोबी, दिलीप लखारा, राजूलाल तेली, कमलेश त्रिवेदी, लक्ष्मीलाल गंगवाल, गोपाल दशोरा, अशोक दशोरा, गिरीराज सोमानी ने किया। इस दौरान ब्लॉक कार्यकारिणी की ओर से जिला कलेक्टर से सीएसआर हेड से सम्पूर्ण जिले के राजकीय प्रावि व उप्रावि में स्मार्ट टीवी दिये जाने की मांग की।

मुख्यमंत्री सद्भावना केंद्र पर एकत्रित वस्तुएं कपासन के जरूरतमंद को नि:शुल्क मिल सकेगी

बढ़ता राजस्थान

कपासन (नि.स.)। नगर पालिका प्रशासन द्वारा शुक्रवार को नगर में मुख्यमंत्री सद्भावना केंद्र की शुरुआत की गयी।यहां एकत्रित होने वाली आवश्यक वस्तुओं एवं विभिन्न सामग्री का नि:शुल्क जरूरतमंद लोगों में वितरण किया जायेगा। नगर पालिका कपासन अधिशाषी अधिकारी ललित सिंह देथा ने बताया कि आमजन द्वारा अनुपयोगी वस्तुएं फेंक दी जाती हैं या वह वस्तुएं कबाड़ में चली जाती हैं।अब मुख्यमंत्री सद्भावना केंद्र के माध्यम से एकत्रित होने वाली विभिन्न वस्तुएं एवं सामग्री का जरूरतमंद लोगों में नि:शुल्क वितरण किया जा सकेगा।जिससे निर्धन एवं जरूरतमंदो को उक्त वस्तुएं एवं सामग्री उपयोग में आ सकेगी। उल्लेखनीय है कि राज्य सरकार के निर्देशानुसार नागरिकों,संस्थाओं व वाणिज्यिक उद्यमों से पुराने कपड़े, खिलौने,जूते, किताबें,फर्नीचर,इलेक्ट्रॉनिक इत्यादि सामग्री एकत्र कर निर्धन एवं जरूरतमंद लोगों को नि:शुल्क दिया जाये।जिसके तहत स्वायत्त शासन विभाग द्वारा नगर पालिका को मुख्यमंत्री सद्भावना केंद्र स्थापित करने के निर्देश दिये गये। इसके उपरांत नगर पालिका कपासन अध्यक्ष मंजु देवी सोनी के निर्देशन में नगर पालिका के बाहर बस स्टैंड के समीप नगर पालिका प्रशासन द्वारा मुख्यमंत्री सद्भावना केंद्र स्थापित किया तथा नगर पालिका अध्यक्ष मंजुदेवी सोनी द्वारा क्षेत्रीय आमजन से मुख्यमंत्री सद्भावना केंद्र का उपयोग करने का आग्रह किया गया है।

स्वर्णकार समाज के लोगों ने प्रधान मंत्री के नाम एसडीएम को दिया ज्ञापन

बढ़ता राजस्थान

जजावर (पदम शाह)। अखिल भारतीय स्वर्णकार समाज के बैनर तले शुक्रवार को बूंदी जिले के स्वर्णकार समाज के लोगों सहित सोना चांदी की घड़ाई कर अपनी रोजी रोटी चला रहे समाज के लोगों ने आज सोना-चांदी की बढ़ती कीमतो पर नियंत्रण करने के लिए एक पांच सूत्रीय ज्ञापन प्रधान मंत्री के नाम हिंडोली एसडीएम को दिया।

युवा समाज सेवी एवं स्वर्णकार समाज के नेता दीक्षांत सोनी ने बताया कि प्रधानमंत्री विश्वकर्मा योजना में शामिल स्वर्णकार समाज से जुड़े परिवारो एवं कारीगरो का आज चांदी-सोने के बढ़ते आसमान छूते भाव की वजह से लालन-पालन करना गंभीर चिंता का विषय बना हुआ हैं एवं इस विषय पर प्रधानमंत्री जी एवं वित्त मंत्री जी यह नहीं बता सकते कि आने वाले कल में चांदी-सोने का भाव क्या रहेगें जिससे यह साबित होता है कि वाकई चांदी-सोना भारत सरकार के आधिपत्य से बाहर है ।

महिला दिवस पर विशेष

तानो से लड़कर हौसले की पतवार से चुनौतियों की दी मात बनाई पहचान, पीरियड पाठशाला से जोड़ा देश की लाखो महिलाओ को प्रेरणा और जज्बे की मिसाल : पैडवुमन भावना पालीवाल

बढ़ता राजस्थान

राजसमंद (सुरेश बागोरा)। महिला दिवस पर हम आपको बता रहे हैं ऐसी महिला के बारे में जिन्होंने जीवन में बहुत सी मुश्किलों का सामना किया, लेकिन कभी हार नहीं मानी हमारे समाज में महिलाओं की भूमिका केवल परिवार तक सीमित नहीं है, बल्कि वे आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक बदलाव की धुरी बन रही हैं।

ऐसी ही कुछ प्रेरणादायक मजबूत जज्बे की मिसाल है राजसमन्द जिले के रहने वाली पैडवुमन भावंना पालीवाल । पीरियड्स को लेकर हमारे समाज में कई तरह के धार्मिक आडंबर हैं। पीरियड्स के कारण अक्सर लड़कियों को स्कूल तक छोड़ देना पड़ता है और गंदे कपडे के कारण कई महिलाए कोख खो देती है । मासिक धर्म के प्रति फैले आडंबरों को दूर करने के लिए 16 वर्षो से पैडवुमन भावंना पालीवाल ने पीरियड पाठशाला, स्त्री स्वाभिमान, रेड डॉट, चुप्पी तोड़ो, मेरी लाडो, 'हैप्पी टू ब्लीड', अब पता चलने दो, सहित कई अभियान चलाकर उन्हें शिक्षित और जागरूक करने का बीड़ा उठाया है और भावना अपने इन्ही अभियानो की वजह से पैडवुमन के नाम से जानी जाती है । पालीवाल का कहना है की बचपन में स्कूल समय में पहली बार पीरियड्स आए क्लासरूम में तो शर्मिंदगी झेलनी पड़ी यही नहीं हर जगह एक रूल बना दिया गया जैसे मुझे कोई श्राप सा लगा है डर सी गई थी लेकिन मन में एक सोच थी इसे बदलने की।

स्त्री स्वाभिमान अभियान : भावना मासिक धर्म को लेकर भ्रांतियों को दूर कर रही है। वे स्त्री स्वाभिमान अभियान भी संचालित कर रही हैं। इसके तहत वे गांव-गांव महिलाओं को मासिक धर्म के प्रति जागरूक कर रही है। मासिक धर्म को लेकर फैली भ्रांतियों को दूर करने का काम कर रही हैं। जिससे आदिवासी क्षेत्र की बेटियों में जागरूकता आई है। यही नहीं वे अभिभावकों को भी इसके बारे में खुलकर बता रही हैं। भावना का मानना है कि बच्चियों को 11-12 की उम्र में मासिक धर्म की जानकारी दे देनी चाहिए।

मिला सम्मान : भावना के उत्कृष्ट कार्य की सराहना राष्ट्रीय स्तर तक की जा चुकी है। उनके कार्य को देखते हुए उन्हें युवा मंत्रालय भारत सरकार द्वारा 2024 में राजस्थान के यूथ आइकॉन के तौर पर भारत मंडपम में बुलाकर सम्मान किया गया।

युवक का अपहरण कर जंगल में ले जाकर मारपीट करने और यातना देने का मामला

कोतवाली पुलिस ने लिया मामले में एक्शन मामले में लिप्त पांच आरोपी बदमाश गिरफ्तार

गिरफ़्त में आये आरोपियों से पुलिस कर रही पूछताछ

बढ़ता राजस्थान

बाड़ी (राजू शर्मा)। शहर की कोतवाली थाना पुलिस ने करीब 3 दिन पुराने अपहरण कर जंगल में ले जाने और पीड़ित को यातना देने के साथ मारपीट करने के मामले में वीडियो वायरल होने के बाद पीड़ित द्वारा कराई गई रिपोर्ट पर तुरंत कार्रवाई करते हुए मामले में लिप्त पांच बदमाशों को गिरफ्तार किया है। गिरफ्त में आए बदमाशों से अब कोतवाली एसएचओ अमित शर्मा पूछताछ कर रहे हैं। कोतवाली थाना अधिकारी अमित शर्मा ने बताया कि 5 मार्च को सोशल मीडिया पर एक वीडियो वायरल हुआ था। जिसमें कुछ लोग एक युवक की जंगल में खेतनुमा स्थान पर बेरेहमी से मारपीट कर रहे थे साथ में उसको यातना भी दी जा रही है। ऐसे में उक्त वीडियो के

वायरल होने के बाद एसपी सुमित मेहरड़ा को पूरे मामले से अवगत कराते हुए पीड़ित की जानकारी की गई। जिसको थाने पर बुलाकर रिपोर्ट दर्ज कराई गई। पीड़ित कल्ला उर्फ कल्याण कुशवाह निवासी बगीची सैपऊ रोड़ बाड़ी ने थाने पर रिपोर्ट दर्ज कराते हुए बताया कि सभी आरोपी बदमाश हैं। जो उससे रंजिश रखते हैं। वे उसे हथियार के बल पर जबरन उठाकर जंगल में ले गए थे और मारपीट के साथ गम्भीर यातना दी थी। उक्त मामले को पुलिस ने एफआईआर संख्या 78/25 में धारा 189(2),115(2),126(2), 127(2),140(3) और 307 एवं 351 बीएनएस में दर्ज करते हुए आरोपियों की गिरफ्तारी के लिए विशेष टीम का गठन किया। कोतवाली थाने के एएसआई नीरज कुमार,एएसआई वीरेंद्र कुमार,हेड कांस्टेबल रामनरेश,योगेंद्र कुमार एवं कांस्टेबल सतीश,अमित सिंह,मानिकचंद और डीएसटी टीम ने उक्त मामले में कार्रवाई करते हुए गुरुवार की शाम पांच आरोपियों को कंचनपुर थाना क्षेत्र के बीहड़ में खेतों से गिरफ्तार किया है। जहां यह आरोपी छिपे हुए थे।

यह बदमाश लगे पुलिस के हाथ

एसएचओ अमित शर्मा ने बताया कि गिरफ्त में आये पांचों आरोपी आदतन बदमाश है। जिनमे बंटू पुत्र भोगीराम गुर्जर निवासी अतरामपुरा थाना कंचनपुर पर 28 मामले दर्ज हैं। नीतू पुत्र सुरेंद्र गुर्जर निवासी सैपऊ रोड़ पर 35 मामले दर्ज है। हरेंद्र उर्फ हरवेंद्र पुत्र मोहन गुर्जर निवासी लालोनी पर 05 मामले,योगेंद्र उर्फ योगी पुत्र मेहताब गुर्जर निवासी गजपुरा पर एक मामला और अतर सिंह पुत्र उदयभान गुर्जर निवासी सिंगरावली थाना गढ़ी बाजना भरतपुर पर चार मामले दर्ज है। जिनसे गिरफ्तारी के बाद उक्त मामले में पूछताछ की जा रही है।

सर्विस रोड और मचकुंड रोड से हटाए स्थाई-अस्थाई निर्माण बरसात में जलभराव की समस्या से लोगों को मिलेगी राहत

बढ़ता राजस्थान

बाड़ी (राजू शर्मा)। बारिश के मौसम में जलभराव की समस्या से इस बार लोगों को निजात मिलने की उम्मीद दिखाई दे रही है। जलभराव की समस्या को देखते हुए जिला कलेक्टर श्रीनिधि बीटी के साथ नगर परिषद और पुलिस की टीम ने अतिक्रमण हटाओ अभियान चलाया। सुबह 5 से शुरू किए गए अभियान के तहत हाईवे की सर्विस रोड के साथ मचकुंड रोड पर स्थाई और अस्थाई निर्माण ध्वस्त किए गए हैं। कार्रवाई को लेकर नगर परिषद आयुक्त अशोक शर्मा ने बताया कि आगरा-मुंबई राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 44 की सर्विस रोड पर लगातार हो रहे जलभराव के बाद लोगों को 100 फीट रोड चौड़ी करने के लिए अतिक्रमण हटाने के निर्देश दिए गए थे। जिसके बाद भी अतिक्रमण को नहीं हटाया गया था। उन्होंने बताया कि सर्विस रोड पर तीन जेसीबी मशीन की सहायता से स्थाई और अस्थाई अतिक्रमणों को हटाने की कार्रवाई की गई है। इसके साथ ही सर्विस रोड के नाले को भी शुरू कराने के निर्देश दिए गए हैं। हाईवे की सर्विस रोड के साथ मचकुंड रोड पर भी स्थाई और अस्थाई अतिक्रमण हटाए गए हैं। पिछले साल बारिश के समय में नगर परिषद ने बाड़ी रोड पर होने वाले जलभराव को

रोकने के लिए मचकुंड रोड पर नाले को बनवाने का काम शुरू किया था। जिसे अतिक्रमण होने की वजह से बीच में छोड़ दिया गया था। शुक्रवार सुबह नगर परिषद और पुलिस में मचकुंड रोड से भी स्थाई और अस्थाई अतिक्रमण हटाए हैं। जिसके बाद नाले के काम को पूरा किया जाएगा।

शेरपुर उपतहसील को पंचायत समिति में बदलने की मांग ग्रामीणों ने एसडीएम हेमराज गुर्जर को सौंपा ज्ञापन

बढ़ता राजस्थान

हिंडौन सिटी (अंशु गुप्ता)। शेरपुर उपतहसील को पंचायत समिति में बदलने की मांग उठी है। शुक्रवार को ग्रामीणों ने एसडीएम हेमराज गुर्जर को इस संबंध में ज्ञापन सौंपा।

ग्रामीण नेताओं नाहर सिंह डागुर और रामप्रकाश डागुर के अनुसार, शेरपुर की जनसंख्या 2011 की जनगणना में 8,800 थी। अब यह बढ़कर 16,000 हो गई है। यहां 4,600 मतदाता हैं। क्षेत्र में पहले से कई बुनियादी सुविधाएं मौजूद हैं। इनमें राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, तीन निजी स्कूल, तीन आंगनबाड़ी केंद्र, ग्राम सेवा सहकारी समिति, बिजली सब स्टेशन, पशु चिकित्सालय और सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र शामिल हैं।वर्तमान में इस क्षेत्र में 20 ग्राम पंचायतें हैं।

नई ग्राम पंचायतों के गठन के बाद यह संख्या 25 तक पहुंच जाएगी। ग्रामीणों का कहना है कि शेरपुर को पंचायत समिति का दर्जा मिलने से आसपास के पिछड़े गांवों का विकास होगा। इस मांग को लेकर पहले करौली विधायक दर्शन सिंह गुर्जर को भी ज्ञापन दिया जा चुका है।ज्ञापन सौंपने वालों में ग्राम पंचायत शेरपुर के सरपंच लखन सिंह जाटव, भाजपा नेता कामराज डागुर, पूर्व मंडल अध्यक्ष उधम सिंह डागुर, भाजपा युवा मोर्चा के जिला मंत्री राम प्रकाश डागुर, एबीवीपी जिला संयोजक योगेंद्र सिंह डागुर समेत कई ग्रामीण मौजूद थे।

महिला सशक्तिकरण को लेकर अपर न्यायिक मजिस्ट्रेट ने लगाया शिविर

बढ़ता राजस्थान

बाड़ी (राजू शर्मा)। शहर में 8 मार्च शनिवार को राष्ट्रीय लोक अदालत का आयोजन होने जा रहा है। इस लोक अदालत में लोग राजीनामा के तहत अपने विभिन्न विवादों,मुकदमो और लंबित चल चले मामलों का निस्तारण कर सके,इसको लेकर लगातार पिछले एक सप्ताह से जागरूकता के प्रयास किये जा रहे हैं। इसकी जागरूकता के साथ आठ मार्च महिला दिवस को लेकर शहर की एसीजेएम संख्या दो चित्रांशी सिंह ने सीनियर सेकेंडरी स्कूल पहुंच बालिकाओं को लोक अदालत की जानकारी दी और इसके महत्व से अवगत कराया साथ मे राजस्थान राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण जयपुर के निर्देश एवं अध्यक्ष तालुका विधिक सेवा समिति बाड़ी एडीजे नीरज कुमार के निर्देश पर महिला सशक्तिकरण के संबंध में शिविर का आयोजन किया। उक्त शिविर में उन्होंने उपस्थित छात्राओं को नारी सशक्तिकरण और बालिकाओं के अधिकारों के संबंध में भी जानकारी दी। उन्होंने स्कूल में मौजूद बालिकाओं को बताया कि आज भी ग्रामीण क्षेत्र में कई जगह ऐसी हैं। जहां महिलाओं को केवल काम के लिए ही बनाया है। ऐसी सोच लोग रखते हैं। उन्हें ना तो पढ़ाया जाता है और ना ही उन्हें किसी भी दृष्टि में सशक्त बनाया जाता है। ऐसे में वे गांव लगातार पिछड़ेपन का शिकार हो रहे है। शिविर में स्कूल प्राचार्य हरिओम सिकरवार के साथ कोर्ट स्टाफ पंकज सैनी मौजूद रहे।

ऐतिहासिक बारह भाई मेले को लेकर प्रशासन की बैठक, पदाधिकारियों से ली जानकारी

बढ़ता राजस्थान

बाड़ी (राजू शर्मा)। शहर के 167 वर्ष पुराने ऐतिहासिक बारह भाई मेले को लेकर शुक्रवार को उपखंड प्रशासन और मेला कमेटी के पदाधिकारी की एक बैठक का आयोजन एसडीएम कार्यालय में किया गया। एसडीएम भगवत शरण त्यागी और बाड़ी पुलिस सर्किल अधिकारी सीओ महेंद्र कुमार द्वारा ली गई बैठक में मेला कमेटी के अध्यक्ष रामवीर पोसवाल, महामंत्री पवन चंसोरिया के साथ मेला कमेटी के अन्य पदाधिकारी मौजूद रहे। एसडीएम भगवत शरण त्यागी ने मेला कमेटी के पदाधिकारीयो को अवगत कराया की यह नगर का सबसे प्राचीन मिला है। जो अपना विशेष महत्व रखता है। ऐसे में मेले के आयोजन के दिन मेले की शुरुआत जितनी जल्दी हो सके की जाए।

तेरापंथ महिला मंडल केलवा द्वारा अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाया

बढ़ता राजस्थान

राजसमंद (सुरेश बागोरा)। अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशानुसार अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस 6 मार्च गुरुवार को केलवा महिला मंडल द्वारा मनाया गया स्वरधारा कवि सम्मेलन कार्यक्रम का आगाज नमस्कार महामंत्र एवं भिक्षु अष्टकम द्वारा श्रीमती रेखा कोठारी एवं उनकी टीम ने किया प्रेरणा गीत की काव्य प्रस्तुति परामर्श श्रीमती बिंदिया सांखला ने एक्शन के साथ प्रस्तुति दी अध्यक्षा श्रीमती नीरू कोठारी ने मुख्य अतिथि केलवा सरपंच प्रेरणा सम्मान पानी वाली कवयित्री राधा कृष्ण मंडल स्वच्छ केलवा हरित क्रांति एवं अपनी सशक्त आदरणीय महिला टीम का स्वागत वक्तव्य से किया कार्यशाला में मुख्य अतिथि केलवा सरपंच साहिबा सम्मानीय श्रीमती सुमन साहू ने अपने वक्तव्य मेकहा अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस यह संदेश देता है प्रत्येक नारी हमेशा 12 ही महीने महिला दिवस मनाएं अपने आपके लिए जिए अपना आत्मसम्मान कभी खोने नहीं दें श्रीमती विभा गांग वर्षा कोठारी एवं संगीता कोठारी ने नारी जागृति पर अपनी कविताएं प्रस्तुत की मंत्री श्रीमती भावना बोहरा ने प्रेरणा सम्मान प्राप्त कवयित्री भावना लौहार का परिचय एवं प्रेरणा सम्मान पत्र का वाचन किया राधा कृष्ण मंडल ने भी अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर अपनी गायन के साथ भजन की प्रस्तुति दी कवियत्री भावना लौहार ने अपनी मधुर आवाज से काव्य रसधारा रचनाओं की प्रस्तुती दी पूरी कार्यकारिणी द्वारा कवियत्री को प्रेरणा सम्मान से सम्मानित किया गया केलवा सरपंच राधा कृष्ण मंडल स्वच्छ केलवा हरित कांति सभी अतिथिगण का अपर्णा एवं साहित्य से सम्मान किया गया श्रीमती कुसुम सांखला ने आभार व्यापित किया कुशल संचालक महिला मंडल की उपाध्यक्ष श्रीमती रत्ना कोठारी ने किया समय पर आने वाले सदस्यों का लॉटरी सिस्टम से चिट निकालकर पुरस्कृत किया गया जिसमें श्रीमती मोनिका कोठारी एवं रेखा कोठारी(सुनील)रहै जय जय ज्योति चरण जय जय महाश्रमण नारी का सम्मान करो सम्मान करो नारो के साथ प्रोग्राम का समापन किया गया।

टोंक पुलिस की नशे के खिलाफ कार्रवाई, 4.89 ग्राम स्मैक के साथ एक गिरफ्तार

बढ़ता राजस्थान

टोंक (का.स.)। जिले में नशे के खिलाफ सख्त कार्रवाई जारी है। पुलिस अधीक्षक विकास सांगवान के निर्देश पर थाना सदर टोंक पुलिस ने एक आरोपी को 4.89 ग्राम अवैध मादक पदार्थ स्मैक के साथ गिरफ्तार किया है। अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक बृजेन्द्र सिंह माटी और वृत्ताधिकारी राजेश विद्यार्थी के सुपरविजन में थाना प्रभारी जयमल सिंह व डीएसटी टीम ने संयुक्त कार्रवाई करते हुए यह गिरफ्तारी की। 6 मार्च 2025 को पुलिस टीम संतोष नगर इलाके में गश्त कर रही थी। इस दौरान संदिग्ध लगने पर एक व्यक्ति को रोका गया। तलाशी लेने पर उसके कब्जे से 4.89 ग्राम अवैध स्मैक बरामद हुई। आरोपी की पहचान महबूब उर्फ मोहम्मद मिया उर्फ मोटा (40 वर्ष), पुत्र शहजाद, जाति मुसलमान तेली के रूप में हुई है। वह मूल रूप से कुम्हारों की चौकी, थाना कोतवाली टोंक का निवासी है और वर्तमान में संतोष नगर, थाना सदर टोंक में रह रहा था। आरोपी के खिलाफ थाना सदर टोंक में मुकदमा नंबर 72/2025 धारा 8/21 एनडीपीएस एक्ट के तहत मामला दर्ज किया गया है। इस मामले की जांच उपनिरीक्षक ओमप्रकाश, थाना मेहंदवास टोंक को सौंपी गई है। पुलिस प्रशासन का कहना है कि इलाके में नशे के कारोबार में संलिप्त लोगों के खिलाफ अभियान लगातार जारी रहेगा।

वैज्ञानिक लिहाज से रोजा शरीर को बनाता है सेहतमंद : डॉक्टर मोहम्मद रोशन

बढ़ता राजस्थान

जयपुर (का.स.)। रमदान या रमज़ान का मुकद्दस महीना 2 मार्च से शुरू हो गया है, रमजान के पाक महीने में रोजा रखना मुसलमानों का फर्ज माना गया है। लेकिन ये तो धार्मिक कारण है। इससे इतर कई विद्वान व चिकित्सक एक महीने के इस रोजे के पीछे वैज्ञानिक कारण भी मानते हैं। वरिष्ठ यूनानी चिकित्सा अधिकारी डॉ मोहम्मद रोशन कहते हैं कि मुसलमानों में यह रोजा लगातार एक महीने का जरूर होता है। परंतु अन्य धर्मो में भी तो उपवास होता ही हैं। हिन्दुओं में यह सप्ताह में दो से तीन दिन का भी होता है। लेकिन अतिशयोक्ति नहीं होगी कि धर्म के साथ विज्ञान तो जुड़ा है ही। पूरे वर्ष में एक माह का फास्टिंग शरीर के लिये कई मायने में फायदेमंद होता है। रोजे के दरम्यान प्रोटीन और यूरिक एसिड भी नार्मल हो जाता है। इस महीने में शरीर मानसिक रूप से तनाव मुक्त हो जाता है। उन्होंने कहा कि चावल, आलू आदि के खाने से शरीर में स्टार्च की मात्रा बढ़ता है। एक महीने तक इसके नियंत्रित सेवन से शरीर में इस दरम्यान स्फूर्ति बरकरार रहता है। रोजा के दिनों में जमा फैट का उपयोग

शरीर द्वारा किया जाता है जिससे शरीर में इसकी मात्रा कम होती है। ऐसे में ब्लड प्रेशर, हर्ट डिजीज आदि में फायदा होता है। डॉ रोशन कहते हैं कि फास्टिंग के दरम्यान लोगों को सावधानी भी बरतना चाहिये। इस समय ग्लूकोज बर्न होता है। स्वाभाविक है कि कमजोरी भी महसूस होता है। रोजा के समय ब्लड प्रेशर, डायविटीज आदि से ग्रस्त लोगों को अधिक पेशाब होने वाले दबाई का सेवन कम कर देना चाहिये या अपने चिकित्सक से परामर्श लेना चाहिये। सेहरी और इफ्तार के समय कम मात्रा में लेकिन रात का भोजन भरपूर मात्रा में लेना चाहिये। उन्होंने कहा कि नमक और सीप की मात्रा कम लेना आवश्यक है ताकि प्यास कम लगे। साथ ही इफ्तार और सेहरी के समय फाईब्रस और सूगर कंटेनिंग डाइट के साथ ही फलों का सेवन अधिक करना चाहिये।

खजूर से रोजा खोलने के पीछे है वैज्ञानिक कारण

रोजा इफ्तार के दौरान खजूर का विशेष रूप से सेवन करते हैं। दरअसल, हदीस में खजूर से रोजा इफ्तार करने बात आई है। इफ्तार करने का सुन्नत (पैगंबर मोहम्मद जो भी काम करते थे, उन्हें सुन्नत करार दिया गया है।) के मुताबिक तरीका ये है कि रूतब (पके हुए ताज़ा खजूर) से रोजा इफ्तार किया जाए। विशेषज्ञ की मानें तो रोजा खजूर से खोलने से सवाब मिलता है, लेकिन सवाब मिलने के साथ-साथ ये आपकी सेहत के लिए भी फायदेमंद है। बता दें कि खजूर में नेचुरल शुगर होती है, जिससे रोजा रखने के दौरान कम हुआ शुगर लेवल बैलेंस हो जाता है। खजूर में सुक्रोज, फ्रुक्टोज और ग्लूकोज पाए जाते हैं। खजूर में भरपूर मात्रा में मैग्नीशियम पाया जाता है। मैग्नीशियम में ज्वलनरोधी गुण होता है। खजूर में मौजूद पोटैशियम अधिक ब्लड प्रेशर को भी कम करने का काम करता है। खजूर से रोजा इफ्तार करने पर शरीर को तुरंत ताकत मिलती है। इसमें कोलेस्ट्रॉल का स्तर भी कम होता है।

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस आज

हार हो जाती है जब मान ली जाती है, जीत तब होती है जब ठान ली जाती है यह शेर उन महिलाओं पर एकदम फिट बैठता है, जिन्होंने मुश्किल से मुश्किल हालात में भी हार नहीं मानी और समाज में अपनी एक अलग पहचान बनाई। वर्तमान समय में महिलाएं न सिर्फ राष्ट्र बल्कि समाज में भी पुरुषों जितनी ही सक्षम हैं। महिलाएं आज हर क्षेत्र में कदम से कदम मिलाकर आगे बढ़ रही हैं। हांलाकि महिलाओं को आज भी पुरुषों जितना मान-सम्मान और अवसर नहीं मिलता है। इसकी एक बड़ी वजह यह भी है कि महिलाओं को उनके अधिकारों के बारे में न पता होना। एक ही क्षेत्र में समान काम करने के बाद भी महिलाओं को पुरुषों जितना वेतन नहीं मिलता है। आपको बता दें कि हर क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी को बढ़ावा देने और उनको अपने अधिकारों के बारे में जागरुक करने के लिए हर साल 08 मार्च को अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस मनाया जाता है। इस दिन दुनियाभर में तमाम तरह के कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। महिला दिवस मनाए जाने का मुख्य उद्देश्य महिलाओं को समाज में पुरुषों के बराबर सम्मान, कार्य के समान अवसर प्रदान करने के साथ ही अपने अधिकारों के बारे में जागरुक किया जाना है।

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस का इतिहास

हर साल 08 मार्च को अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस मनाया जाता है। साल 1909 से इस दिन को मनाए जाने की शुरूआत हुई थी। दरअसल, साल 1908 में अमेरिका में मजदूर आंदोलन हुआ था। इस आंदोलन में करीब 15 हजार महिलाएं भी शामिल हुई थीं, इन महिलाओं ने न्यूयॉर्क की सड़कों पर उतरकर अपने मतदान के अधिकार की मांग की थी। साथ ही महिलाओं की मांग थी कि नौकरी के घंटे कम करने के साथ ही उनकी सैलरी बढ़ाई जाए। जब कामकाजी महिलाओं के आंदोलन की आवाज सरकार तक पहुंची, तो इस आंदोलन के एक साल बाद 1909 में अमेरिका की सोशलिस्ट पार्टी ने महिला दिवस मनाने का ऐलान किया।

क्यों मनाते हैं अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस

वहीं हर साल 08 मार्च को महिला दिवस मनाए जाने की एक खास वजह यह भी है कि कामकाजी महिलाओं ने अमेरिका में 08 मार्च को अपने अधिकारों की मांग करते हुए आंदोलन किया था। जिसके बाद इस दिन सोशलिस्ट पार्टी ने महिला दिवस मनाए जाने का ऐलान किया। वहीं फिर साल 1917 में रूस की महिलाओं ने पहले विश्व युद्ध के दौरान ब्रेड और पीस के लिए हड़ताल किया। फिर सम्राट निकोलस ने अपने पद का त्याग किया और इस तरह से महिलाओं को मतदान का अधिकार मिला। वहीं कुछ दिन बाद 08 मार्च को यूरोप की महिलाएं ने भी पीस ऐक्टिविस्ट्स का समर्थन करते हुए रैलियां निकाली। इस वजह से 08 मार्च को अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस मनाए जाने की शुरूआत हुई। बाद में संयुक्त राष्ट्र ने साल 1975 में अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस को मान्यता दे दी।

महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी से लोकतंत्र की जड़ें मजबूत होती हैं

हम विश्व में लगातार कई वर्षों से अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस मनाते आ रहे हैं, महिलाओं के सम्मान के लिए घोषित इस दिन का उद्देश्य सिर्फ महिलाओं के प्रति श्रद्धा और सम्मान बताना है। इसलिए इस दिन को महिलाओं के आध्यात्मिक, शैक्षिक, आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक उपलब्धियों के उपलक्ष्य में मनाया जाता है। नारी मानव जाति के लिए जननी का रूप है। कहा जाए तो जननी ही नारी है और नारी ही जननी है। नारी शक्ति या मातृशक्ति का इस संसार को आगे बढ़ाने में अहम् योगदान है। बिना नारी के इस दुनिया की कल्पना नहीं की जा सकती। अगर नारी नहीं होगी तो इस संसार का विकास नहीं हो पायेगा। नारी ही एक पुरुष को जन्म देती है, तभी नारी की सहन करने की शक्ति यानी सहनशक्ति का अहसास होता है कि वह इस संसार में कितनी मजबूत शक्ति है। आज उसी ही मजबूत नारी शक्ति पर कुछ मानसिक रूप से विक्षिप्त पुरुषों (ऐसे पुरुष जो नारी शक्ति को अपने उपभोग की वस्तु समझते हैं) द्वारा बलात्कार जैसी घटनाएं होती हैं। ऐसे पुरुषों द्वारा नारी को शारीरिक शोषण द्वारा हमेशा लज्जित किया जाता है, यह चीज समस्त मानवजाति को शर्मसार करती है। कुछ पुरुषों के ऐसे कृत्यों द्वारा बाकी के साफ-सुथरी छवि के पुरुषों को भी शर्मसार होना पड़ता है। आज जरूरत है महिलाओं और छोटी छोटी बच्चियों के खिलाफ बलात्कार जैसी होनी वाली घटनाओं पर लगाम लगाई जाए। ये तभी हो सकता है जब बलात्कार जैसे कृत्यों के खिलाफ मानव जाति एकजुट होकर फैंसला ले और जो लोग दोषी पुरुषों का साथ देते हैं ऐसे लोगों का भी समाज पूर्ण रूप से बहिष्कार करे। इसके साथ ही आज जरूरत है कि बलात्कार जैसे कृत्यों के खिलाफ सरकारें एक कड़ी से कड़ी सजा का प्रावधान करें और बलात्कार जैसे मामलों की फास्टट्रैक कोर्ट द्वारा त्वरित कार्यवाही हो। जिससे कि दूसरे लोग भी ऐसे कृत्य करने से पहले सौ बार सोचें। तभी मानव जाति और समाज के स्तर को उठाया जा सकता है।

आज अपने समाज में नारी के स्तर को उठाने के लिए सबसे ज्यादा जरूरत है महिला सशक्तिकरण की। महिला सशक्तिकरण का अर्थ है महिलाओं की आध्यात्मिक, शैक्षिक, सामजिक, राजनैतिक और आर्थिक शक्ति में वृध्दि करना, बिना इसके महिला सशक्तिकरण असंभव है। आज हर महिला समाज में धार्मिक रूढ़ियों, पुराने नियम कानून में अपने आप को बंधा पाती है। पर अब वक्त है कि हर महिला तमाम रूढ़ियों से खुद को मुक्त करे। प्रकृति ने औरतों को खूबसूरती ही नहीं, दृढ़ता भी दी है। प्रजनन क्षमता भी सिर्फ उसी को हासिल है। भारतीय समाज में आज भी कन्या भ्रूण हत्या जैसे कृत्य दिन-रात किए जा रहे हैं। पर हर कन्या में एक मां दुर्गा छिपी होती है। यह हैरत की बात है कि दुर्गा की पूजा करने वाला इंसान दुर्गा की प्रतिरूप नवजात कन्या का गर्भ में वध कर देता है। इसमें बाप, परिवार के साथ समाज भी सहयोग देता हैं। आज जरूरत है कि देश में बच्चियों को हम वही आत्मविश्वास और हिम्मत दें जो लड़कों को देते हैं। इससे प्रकृति का संतुलन बना रहे। इसलिए जरूरी है कि इस धरती पर कन्या को भी बराबर का सम्मान मिले। साथ ही उसकी गरिमा भी बनी रहे। इसलिए अपने अंदर की शक्ति को जागृत करें और हर स्त्री में यह शक्ति जगाएं ताकि वह हर विकृत मानसिकता का सामना पूरे साहस और धीरज के साथ कर सके। एक नारी के बिना किसी भी व्यक्ति जीवन सृजित नहीं हो सकता है। जिस परिवार में महिला नहीं होती, वहां पुरुष न तो अच्छी तरह से जिम्मेदारी निभा पाते हैं और ना ही लंबे समय तक जीते हैं। वहीं जिन परिवारों में महिलाओं पर परिवार की जिम्मेदारी होती है, वहां महिलाएं हर चुनौती, हर जिम्मेदारी को बेहतर तरीके से निभाती है और परिवार खुशहाल रहता है। अगर मजबूती की बात की जाए तो महिलाएं पुरुषों से ज्यादा मजबूत होती हैं क्योंकि वो पुरुषों को जन्म देती हैं। भारतीय संविधान द्वारा प्रदत्त भारत के मौलिक के मौलिक अधिकारों के अंतर्गत सभी को अनुच्छेद 14-18 के अंतर्गत समानता का अधिकार दिया गया है। जो कि महिलाओं और पुरुषों को बराबरी का अधिकार देता है। इसके अन्तर्गत यह भी सुनिश्चित किया गया है कि राज्य के तहत होने वाली नियुक्तियों और रोजगार के संबंध में किसी तरह का भेदभाव नहीं किया जाएगा। और संविधान द्वारा मौलिक अधिकारों के अन्तर्गत दिये गया समानता का अधिकार भारतीय राज्य को किसी के भी खिलाफ लिंग के आधार पर भेदभाव करने से रोकता है।

महिला सशक्तिकरण की दिशा में बढ़े कदम

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस हर साल 8 मार्च 1911 से पूरे विश्व में मनाया जाता है। जिसका उद्देश्य महिलाओं की सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और राजनीतिक उपलब्धियों का जश्न मनाना है। लैंगिक समानता हासिल करने और जीवन के सभी क्षेत्रों में महिलाओं की भलाई में सुधार पर ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता पर प्रकाश डालता है। हमारे देश में महिलाओं को पुरुषों के बराबर अधिकार है। महिलायें देश की आधी आबादी का प्रतिनिधित्व करती है तथा विकास में भी बराबर की भागीदार है। आज के युग में महिला पुरुषों के साथ ही नहीं बल्कि उनसे दो कदम आगे निकल चुकी है। महिलाओं के बिना समाज की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। भारतीय संविधान के अनुसार महिलाओं को भी पुरुषों के समान जीवन जीने का हक है। भारत में नारी को देवी के रूप में देखा गया है। कहा जाता है कि जहां नारी की पूजा होती है वहां देवता निवास करते हैं। प्राचीन काल से ही यहां महिलाओं को समाज में विशिष्ट आदर एवं सम्मान दिया जाता है।

भारत वह देश है जहां महिलाओं की सुरक्षा और इज्जत का खास ख्याल रखा जाता है। अगर हम इक्कीसवीं सदी की बात करे तो यहां की महिलाएं हर क्षेत्र में पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिला काम कर रही है। अब तो भारत की संसद ने भी महिलाओं के लिये लोकसभा व विधानसभाओं में 33 प्रतिशत आरक्षण का विधेयक पास कर दिया है। उससे आने वाले समय में भारत की राजनीति में महिलाओं की भूमिका अधिक महत्वपूर्ण हो जायेगी। हमारे देश में महिलाओं को तो अब सेना में भी महत्वपूर्ण पदो पर तैनात किया जाने लगा है। जो महिला सशक्तिकरण की दिशा में एक बड़ा कदम है। हम एक तरफ महिलाओं को हर क्षेत्र में बराबरी का दर्जा देकर उन्हे आगे बढ़ा रहें है। वहीं दूसरी तरफ उनके साथ अत्याचार की घटनाओं में भी लगातार बढ़ोतरी हो रही है। आये दिन हमें महिलाओं के साथ बलात्कार, दुर्व्यवहार होने की घटनाये सुनने को मिलती रहती है। ऐसी घटनाओं से महिला सशक्तिकरण के अभियान को धक्का लगता हैं। भारत में 2022 में महिलाओं के खिलाफ अपराध के कुल 4,45,256 मामले दर्ज किए गए। राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो (एनसीआरबी) के ताजा आंकड़ों में इसका खुलासा हुआ है। इससे पहले 2021 में 4,28,278 और 2020 में 3,71,503 मामले दर्ज किए गए थे। केंद्रीय गृह मंत्रालय के तहत काम करने वाले एनसीआरबी के आंकड़ों के मुताबिक, 2022 में महिला अपराध के सिलसिले में हर घंटे लगभग 51 मामले दर्ज किए गए। आंकड़ों के मुताबिक प्रति एक लाख आबादी पर महिला अपराध की दर 66.4 फीसदी रिकॉर्ड की गई। ऐसे मामलों में आरोप पत्र दायर करने की दर 75.8 फीसदी रही। एनसीआरबी ने बताया कि भारतीय दंड संहिता के तहत महिलाओं के खिलाफ सबसे ज्यादा 31.4 फीसदी जुर्म पति या उसके रिश्तेदारों की क्रूरता किए जाने के थे। इसके बाद अपहरण के 19.2 फीसदी, शील भंग करने के इरादे से महिलाओं पर हमले के 18.7 फीसदी और दुष्कर्म के 7.1 फीसदी मामले रहे। एनसीआरबी के मुताबिक पिछले साल देश में जितने मामले सामने आए उनमें से 2,23,635 यानी 50 फीसदी उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, राजस्थान, पश्चिम बंगाल और मध्य प्रदेश में दर्ज किए गए। उत्तर प्रदेश में 2021 में महिला अपराध के 56,083 और और 2020 में 49,385 मामले दर्ज किए थे। इसके बाद राजस्थान (40,738 और 34,535), महाराष्ट्र (39,526 और 31,954), पश्चिम बंगाल (35,884 और 36,439) और मध्य प्रदेश (30,673 और 25,640) रहे थे। राष्ट्रीय महिला आयोग की ओर से जारी आंकड़ों के मुताबिक 2023 में महिलाओं के खिलाफ अपराध के मामले में उत्तर प्रदेश सबसे आगे रहा। राष्ट्रीय महिला आयोग की तरफ से जारी आंकड़ों के मुताबिक देश भर से पूरे साल में महिलाओं के खिलाफ अपराध की 28,811 शिकायतें मिलीं। इसमें 16 हजार से ज्यादा मामले उत्तर प्रदेश राज्य से आए हैं। आंकड़े हैरान कर देने वाली हैं। क्योंकि आयोग में ये शिकायत गरिमा के अधिकार कैटेगरी के अंतर्गत दर्ज किया गया है। इसके बाद दूसरे नंबर पर राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में 2,411 मामले दर्ज किए गए। महाराष्ट्र में 1,343, बिहार में 1,312 और मध्य प्रदेश में 1,165 इतने मामले दर्ज किए गए हैं। 2023 के 12 महीने बाद जारी किए गए इस रिपोर्ट में महिलाओं के प्रति हो रहे अपराध में दहेज उत्पीड़न और दुष्कर्म जैसे अपराध दर्ज किए गए हैं। राष्ट्रीय महिला आयोग की यह रिपोर्ट महिलाओं के प्रति पुलिस की उदासीनता दिखाती है। आंकड़ों के मुताबिक देश भर में यौन उत्पीड़न के 805 मामले, साइबर अपराध के 605 मामले, पीछा करने की 472 मामले और सम्मान से जुड़े अपराध के खिलाफ 409 शिकायतें दर्ज कराई गईं। आंकड़ों के मुताबिक, महिलाओं के खिलाफ अपराधों में बलात्कार के मामले भी शामिल हैं। साल 2023 में बलात्कार और बलात्कार के प्रयास के 1,537 मामले दर्ज किए गए। इसके बाद गरिमा के अधिकार के तहत 8,540, घरेलू हिंसा के 6,274, दहेज उत्पीड़न के 4,797, छेड़छाड़ के 2,349,और महिलाओं के प्रति पुलिस की उदासीनता के 1,618 मामले दर्ज किए गए। 2023 में महिलाओं के खिलाफ अपराध के मामले 2022 की तुलना में कम हुए हैं। 2022 में महिलाओं के खिलाफ अपराध के 30,864 मामले दर्ज किए गए थे। जबकि 2023 में यह संख्या घटकर 28,278 हो गई। यह एक सकारात्मक संकेत है लेकिन अभी भी बहुत कुछ किया जाना बाकी है। साल 2022 के बाद से शिकायतों की संख्या में कमी देखी गई है। जब 30,864 शिकायतें प्राप्त हुई थी, जो 2014 के बाद से सर्वाधिक आंकड़ा था। जहां तक बात महिलाओं की सुरक्षा की आती है तो पिछले कुछ वर्षों में भारत ने अभूतपूर्व निर्णयों से महिलाओं की सुरक्षा के लिए कई प्रबंध किये हैं। आज भारत में महिलायें पहले की अपेक्षा ज्यादा सुरक्षित है। भारत में वर्षो से महिला सुरक्षा से जुड़े कई कानून बने है। इसमें हिंदू विडो रीमैरिज एक्ट 1856, इंडियन पीनल कोड 1860, मैटरनिटी बेनिफिट एक्ट 1861, क्रिस्चियन मैरिज एक्ट 1872, मैरिड वीमेन प्रॉपर्टी एक्ट 1874,चाइल्ड मैरिज एक्ट 1929, स्पेशल मैरिज एक्ट 1954, हिन्दू मैरिज एक्ट 1955, फॉरेन मैरिज एक्ट 1969, इंडियन डाइवोर्स एक्ट 1969, मुस्लिम वुमन प्रोटेक्शन एक्ट 1986, नेशनल कमीशन फॉर वुमन एक्ट 1990, सेक्सुअल हर्रास्मेंट ऑफ वुमन एट वर्किंग प्लेस एक्ट 2013 आदि। इसके अलावा 7 मई 2015 को लोक सभा ने और 22 दिसम्बर 2015 को राज्य सभा ने जुवेनाइल जस्टिस बिल में भी बदलाव किया है। इसके अन्तर्गत यदि कोई 16 से 18 साल का किशोर जघन्य अपराध में लिप्त पाया जाता है तो उसे भी कठोर सजा का प्रावधान है। देश में महिलाओं के प्रति खराब होते माहौल को बदलने की जिम्मेदारी सिर्फ सरकार की ही नहीं अपितु हर आम आदमी की भी है। हम सभी को आगे आकर महिला सुरक्षा की लड़ाई में महिलाओं का साथ देना होगा तभी देश की मातृ शक्ति सर उठा कर शान से चल सकेगीं। अब महिलाओं को समझना होगा कि आज समाज में उनकी दयनीय स्थिति समाज में चली आ रही परम्पराओं का परिणाम है। इन परम्पराओं को बदलने का बीड़ा स्वयं महिलाओं को ही उठाना होगा। तभी समाज में उनके प्रति सोच बदल पायेगी।

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस पर कविता

नारी से रिश्ते सजे

नारी का सम्मान ही, पौरूषता की आन,
नारी की अवहेलना, नारी का अपमान।

मां-बेटी-पत्नी-बहन, नारी रूप हजार,
नारी से रिश्ते सजे, नारी से परिवार।

नारी बीज उगात है, नारी धरती रूप,
नारी जग सृजित करे, धर-धर रूप अनूप।

नारी जीवन से भरी, नारी वृक्ष समान,
जीवन का पालन करे, नारी है भगवान।

नारी में जो निहित है, नारी शुद्ध विवेक,
नारी मन निर्मल करे, हर लेती अविवेक।

पिया संग अनुगामिनी, ले हाथों में हाथ,
सात जनम की कसम, ले सदा निभाती साथ।

हर युग में नारी बनी, बलिदानों की आन,
खुद को अर्पित कर दिया, कर सबका उत्थान।

नारी परिवर्तन करे, करती पशुता दूर,
जीवन को सुरभित करे, प्रेम करे भरपूर।

प्रेम लुटा तन-मन दिया, करती है बलिदान,
ममता की वर्षा करे, नारी घर का मान।

मीरा, सची, सुलोचना, राधा, सीता नाम,
दुर्गा, काली, द्रौपदी, अनसुइया सुख धाम।

मर्यादा गहना बने, सजती नारी देह,
संस्कार को पहनकर, स्वर्णिम बनता गेह।

RNI NO. RAJHIN/2013/52026
POSTAL REG NO. TONK/49/2022-24
दैनिक बढ़ता राजस्थान

भीलवाड़ा में जमीन-विवाद को लेकर दो पक्ष भिड़े, 18 घायल

एक-दूसरे पर लाठियों से हमला किया, पत्थर फेंके; स्कॉर्पियो- ब्रेजा में तोड़फोड़

बढ़ता राजस्थान

भीलवाड़ा। भीलवाड़ा के मांडल में शुक्रवार को दो परिवारों के बीच विवाद हो गया। दोनों ने एक- दूसरे पर लाठियों से वार किए। फिर जमकर पत्थर फेंके। झड़प में दोनों पक्षों से करीब 18 लोग घायल हो गए। झड़प के बीच गाड़ियों में भी तोड़फोड़ की गई। जानकारी के अनुसार, मांडल थाना क्षेत्र के रूपपुरा गांव में घटना आज शाम करीब 4 बजे हुई। जमीन के विवाद को लेकर बबलू मोहम्मद और इकबाल पठान के दो परिवारों के बीच विवाद बढ़ गया। दोनों के परिवार आमने- सामने हो गए और एक- दूसरे पर लाठियों से हमला कर दिया। घटना में दोनों पक्षों से कुल 18 लोग घायल हो गए। जिनमें से 12 का भीलवाड़ा के महात्मा गांधी हॉस्पिटल में इलाज जारी है। जबकि 6 का मांडल के हॉस्पिटल में इलाज चल रहा है।

एक पक्ष बोला- हमले से पिता की हालत नाजुक, दो गाड़ियों में तोड़फोड़ की

पीड़ित बबलू मोहम्मद ने बताया- आरोपियों से जमीन को लेकर हमारा पुराना विवाद चल रहा है। मेरे पिता जुम्मे की नमाज पढ़ कर अपने खेत पर जा रहे थे। इसी बीच में अयूब पिता मिरचुदिन, फरीद पिता मिरचुदिन, चांद पिता मिरचुदिन, जफरुद्दीन, हारून, इरफान, शहीद सहित कई लोगों ने मेरे पापा की गाड़ी रोक ली और हमला कर दिया। पिताजी के साथ मारपीट की। अम्मी और मेरी गुड़िया, मेरे भाई की वाइफ जो खेत में काम कर रही थी, फारूक ने उन पर गाड़ी चढ़ा दी। मेरी दादी ने मेरे भाई शौकीन को फोन किया तो शौकीन और जिलानी दोनों गाड़ी लेकर आए। आरोपियों ने भाई की गाड़ी के कांच तोड़ दिए। उनके हाथ-पैर तोड़ दिए। दादी ने मुझे फोन किया, मैं पहुंचा तो मेरे साथ भी मारपीट की। मेरी कार में तोड़फोड़ की।

नगर निगम हेरिटेज का सालाना बजट 1439 करोड़ का होगा

बीजेपी पार्षद बोली- मुनेश गुर्जर की तरह कुसुम यादव ने भी पार्षदों से नहीं की चर्चा

बढ़ता राजस्थान

जयपुर। जयपुर नगर निगम हेरिटेज ने लगातार चौथी बार बिना बोर्ड बैठक के सालाना बजट सरकार को भेज दिया है। साल 2025-26 नगर निगम हेरिटेज द्वारा शहर के विकास और मूल कार्यों पर 1439 करोड़ रुपए का बजट तैयार किया गया है। इसे सरकार की स्वीकृति मिलने के बाद लागू किया जाएगा। हालांकि बिना बोर्ड बैठक के बजट अनुमोदन को लेकर पार्षदों ने विरोध शुरू कर दिया है।

जयपुर नगर निगम हेरिटेज की कार्यवहक मेयर कुसुम यादव ने कहा- इस साल विधानसभा सत्र की वजह से इस बार बजट बोर्ड बैठक का आयोजन नहीं हो सका। हर साल फरवरी में ही बजट तैयार कर सरकार तक भेजना होता है। ऐसे में इस बार नगर निगम हेरिटेज में लगभग 1439 करोड़ रुपए का बजट तैयार किया गया है। इसे नगर निगम के कमिश्नर ने सरकार को अनुमोदन के लिए भेज दिया है। उन्होंने कहा कि जल्द ही नगर निगम हेरिटेज द्वारा बोर्ड बैठक का आयोजन किया जाएगा। इसको लेकर इसके प्रस्ताव तैयार किए जा रहे है। जैसे ही विधानसभा सत्र खत्म होगा। 15 मार्च के आसपास मार्च में नगर निगम हेरिटेज की बोर्ड बैठक आयोजित की जाएगी।

परकोटे के 900 दुकानदारों को राहत

हाईकोर्ट ने 19 कॉमर्शियल-कॉम्प्लेक्स के मामले में यथास्थिति के दिए आदेश

बढ़ता राजस्थान

जयपुर। हाई कोर्ट ने परकोटे (वॉलसिटी) में संचालित 19 कॉमर्शियल-कॉम्प्लेक्स के मामले में यथास्थिति के आदेश दिए हैं। हाई कोर्ट के आदेश से ही निगम ने इन कॉम्प्लेक्स को सील करने का नोटिस दिया था। जिसके बाद आज कॉम्प्लेक्स संचालकों द्वारा दायर प्रार्थना पत्र पर सुनवाई करते हुए मुख्य न्यायाधीश एमएम श्रीवास्तव और जस्टिस भुवन गोयल की खंडपीठ ने यथास्थिति के निर्देश दिए।

दरअसल, हाई कोर्ट के निर्देश पर गठित कमेटी ने परकोटे के हल्दियों के रास्ते व इसके आसपास के 19 भवनों को पूरी तरह से अवैध माना था। वहीं 12 भवनों को आंशिक तौर पर अवैध माना था। इन 19 भवनों में से कुछ में अवैध रूप से व्यवसायिक गतिविधियां संचालित हो रही थी। वहीं कई ने वॉलसिटी के हेरिटेज से छेड़छाड़ की थी। जिसके बाद हाई कोर्ट ने इन कॉम्प्लेक्स को सील करने का आदेश दिया था।

जयपुर के 3 बिजनेसमैन के 22 ठिकानों पर छापे

बहरोड़ में बिल्डर का ऑफिस बंद मिला 12 घंटे तक बाहर बैठे रहे आयकर अधिकारी

बढ़ता राजस्थान

जयपुर। जयपुर सहित राजस्थान के तीन शहरों में शुक्रवार सुबह इनकम टैक्स डिपार्टमेंट की टीमों ने छापेमारी की। यह कार्रवाई कारपेट, बिल्डर और कार्गो सर्विस फर्म से जुड़े जयपुर के 3 बिजनेसमैन के 22 ठिकानों पर की गई। बहरोड़ में बिल्डर के ऑफिस में रेड मारने के लिए आयकर विभाग की टीम को 12 घंटे से ज्यादा इंतजार करना पड़ा। सुबह 6 बजे छापा मारने के लिए आशादीप बिल्डर्स के ऑफिस पहुंचे विभाग के 7 से 8 अधिकारी और कर्मचारी ऑफिस के गेट के बाहर गाड़ी में बैठे रहे। शाम करीब 6:45 बजे ऑफिस खोला गया। इसके बाद आयकर विभाग की टीम ऑफिस के अंदर पहुंची और दस्तावेजों की जांच शुरू की। दरअसल, इनकम टैक्स डिपार्टमेंट की टीमें जयपुर, लालसोट और बहरोड़ में आशादीप बिल्डर्स, प्रेम कार्गो लॉजिस्टिक और पर्शियन कारपेट्स के ठिकानों पर सर्च कर रही हैं। बिजनेसमैन अनिल गुप्ता, अशोक पाटनी और शब्बीर खान के जयपुर स्थित ब्रह्मपुरी, बजाज नगर व बापू नगर में स्थित घरों पर भी सर्च किया। बहरोड़ में नेशनल हाईवे पर आशादीप बिल्डर्स की उपवन सोसाइटी में आयकर विभाग की टीम सुबह करीब 7 बजे ही पहुंच गई थी। इंडस्ट्रियल एरिया के पास स्थित सोसाइटी के मेन गेट पर स्थित ऑफिस बंद मिला। सोसाइटी के अंदर टैक्सी नंबर की दो गाड़ियों में आयकर विभाग के अधिकारी बैठे रहे। अधिकारी ऑफिस खुलने के इंतजार में थे, लेकिन सोसाइटी के कर्मचारियों को भनक लगने पर वो ऑफिस खोलने ही नहीं पहुंचे। शाम करीब 6.45 बजे ऑफिस खोला गया। इसके बाद आयकर विभाग की टीम ऑफिस के अंदर पहुंची और दस्तावेजों की जांच शुरू की।

करोड़ों रुपए की टैक्स चोरी का अंदेशा

सूत्रों के मुताबिक, आईटी डिपार्टमेंट की टीमों ने टैक्स चोरी को लेकर तीनों बिजनेसमैन के 22 ठिकानों पर सुबह करीब 7 बजे एक साथ छापेमारी शुरू की। जयपुर में 19, लालसोट में 2 और

बहरोड़ में एक ठिकाने पर रेड डाली गई है। कार्रवाई में बेनामी संपत्ति से संबंधित डॉक्युमेंट, कैश और बैंक लॉकर की जानकारी मिली है। जिसका सत्यापन किया जा रहा है। इनकम टैक्स विभाग ने इस छापेमारी में करोड़ों रुपए के इनकम टैक्स चोरी का खुलासा होने की संभावना जताई है।

इनकम टैक्स डिपार्टमेंट के सूत्रों के मुताबिक, पिछले काफी समय से सूचना मिल रही थी कि तीनों ग्रुप से जुड़े बिजनेसमैन लंबे समय से टैक्स चोरी कर रहे हैं। आईटी विभाग की इन्वेस्टिगेशन टीम की जांच के बाद रेड की कार्रवाई को अंजाम दिया गया।

हरियाणा के पंचकूला में एयरफोर्स का फाइटर जेट जगुआर क्रैश

प्रशिक्षण के लिए उड़ान भरी थी; पहले पेड़ों से टकराया, फिर खाई में जा गिरा

बढ़ता राजस्थान

पंचकूला (एजेंसी)। एयरफोर्स का फाइटर जेट जगुआर शुक्रवार को तकनीकी खराबी की वजह से दोपहर करीब 3.45 बजे हरियाणा में पंचकूला के नजदीक क्रैश हो गया। फाइटर जेट ने अंबाला एयरबेस से प्रशिक्षण के लिए उड़ान भरी थी। हादसा के दौरान पायलट विमान से सुरक्षित बाहर निकल गया। हादसा पंचकूला के मोरनी में बालदवाला गांव के पास हुआ। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, विमान पहले पेड़ों से टकराया, फिर जंगल के बीच एक खाई में गिरा। विमान के गिरते ही उसमें आग लग गई। वह कई टुकड़ों में बंट गया। विमान के टुकड़े आसपास के क्षेत्रों में बिखरे पाए गए। पायलट विमान को रिहायशी इलाके से दूर ले गया, फिर खुद सुरक्षित रूप से बाहर निकल गया। जिसके बाद ग्रामीणों ने वहां पहुंचकर पायलट को पानी पिलाकर मदद की। हादसे की जांच के लिए वायुसेना के विशेषज्ञों की टीम मौके पर पहुंच गई है।

सुप्रीम कोर्ट का धारावी प्रोजेक्ट पर रोक से इनकार

कहा- वहां काम चालू है; यूएई बेस्ड कंपनी की मांग- अडाणी ग्रुप का टेंडर रद्द हो

बढ़ता राजस्थान

नई दिल्ली (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट ने शुक्रवार को धारावी रिडेवलपमेंट प्रोजेक्ट के लिए चल रहे निर्माण कार्य पर रोक लगाने से इनकार कर दिया। साथ ही बॉम्बे हाईकोर्ट के अडाणी ग्रुप के पक्ष में दिए फैसले को पलटने से भी मना कर दिया।

यूएई की कंपनी सेकलिंक टेक्नोलॉजीज कॉर्प ने इस प्रोजेक्ट को अडाणी प्रापर्टीज प्राइवेट लिमिटेड को देने के महाराष्ट्र सरकार के फैसले को चुनौती दी थी। इसी के बाद यह मामला सुप्रीम कोर्ट पहुंचा। सेकलिंक ने अडाणी ग्रुप का

टेंडर रद्द करने की मांग की है। धारावी रिडेवलपमेंट प्रोजेक्ट एशिया का सबसे बड़ा शहरी पुनर्वास कार्यक्रम माना जा रहा है। मुंबई के धारावी को रिडेवलप करने के लिए महाराष्ट्र सरकार ने 2019 में टेंडर जारी किया था। सेकलिंक ने 7,200 करोड़ रुपए की बोली लगाकर प्रोजेक्ट हासिल किया था।

राजस्थान में धर्मांतरण का प्रयास, 4 लोग हिरासत में

120 से ज्यादा आदिवासियों को दे रहे थे प्रवचन

बढ़ता राजस्थान

रेवदर (सिरोही)। सिरोही जिले के रेवदर क्षेत्र में धर्म परिवर्तन के लिए प्रवचन सभा का मामला सामने आया है। विश्व हिंदू परिषद और बजरंग दल की सूचना के बाद पुलिस मौके पर पहुंची और चार लोगों को हिरासत में लिया जबकि एक व्यक्ति मौके से फरार हो गया। विश्व हिंदू परिषद के गौ रक्षा प्रांत कार्यकारिणी सदस्य रणछोड़ पुरोहित ने बताया- रेवदर के करोटी में अनवर नागौरी के कृषि कुएं पर गुरुवार रात करीब 10 बजे प्रवचन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसमें आदिवासी समाज के लोगों को बहला फुसलाकर बुलाया गया और उनका धर्म परिवर्तन करवाने की कोशिश की गई।

राबड़ी से नीतीश बोले-इनके पति डूब गए तो सीएम बनाया

तेजस्वी का जवाब- मुख्यमंत्री की सेहत ठीक नहीं, बिहार चलाने लायक नहीं रहें

बढ़ता राजस्थान

पटना (एजेंसी)। बिहार विधान परिषद में शुक्रवार को विपक्ष की महिला एमएलसी पर सीएम नीतीश कुमार भड़क गए। उन्होंने राबड़ी देवी की तरफ इशारा करते हुए कहा- इनके पति डूब गए तो इन्हें मुख्यमंत्री बना दिया। दरअसल, विधान परिषद में आरजेडी एमएलसी उर्मिला ठाकुर गड़हरा में हाई स्कूल की मांग कर रही थीं। इस पर मुख्यमंत्री नीतीश कुमार को गुस्सा आ गया और उन्होंने राबड़ी देवी की तरफ इशारा करते हुए ये बातें कह दीं। नीतीश कुमार ने कहा कि आप लोग पढ़ कर आती नहीं हैं।

महिलाओं के लिए कितना काम हुआ है, आप को नहीं मालूम है। कुछ नहीं जानती हो, जो महिला के लिए कुछ नहीं किया, उसी पार्टी (आरजेडी) में हैं। आप लोगों को तो बताना चाहिए कि हमने महिलाओं के लिए कितना काम किया है।

बढ़ता राजस्थान प्रिंटिंग प्रेस
दैनिक, साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक समाचार पत्र मुद्रण के लिए संपर्क करें।

उच्च क्वालिटी का कागज एवं स्याही
कलर एवं ब्लैक मुद्रण
किफायती मुद्रण लागत

Printing Press
- Hameedpura Road Khandwa, Newai, Tonk, Rajasthan - 304021

Office
- Badhata Rajasthan, Near Rajkiya Mahavidhyalaya, NH-12, Bypass Newai, Tonk, Rajasthan - 304021
(M) +91-9214048888, Phone No. - 01438-223201, 02, 03
- 185/116, "Pratiksha", Sector-18, Pratap Nagar, Sanganer, Jaipur - 302033
(M) +91-9414242258, Phone No. - 0141-2796795

Email: badhatarajasthanprintingpress@gmail.com

डोटासरा का बेनीवाल पर पलटवार

खींवसर में नशा बढ़ रहा, हनुमान उस पर ध्यान दें; विधानसभा में मेरा रैवेया दूसरा तय नहीं करेगा : डोटासरा

बढ़ता राजस्थान

सीकर। कांग्रेस प्रदेशाध्यक्ष गोविंद सिंह डोटासरा ने कहा- मेरा विधानसभा में क्या रवैया रहना चाहिए, यह कोई दूसरा व्यक्ति तय करेगा क्या? लक्ष्मणगढ़ विधानसभा की जनता ने मुझे जिताया और राजस्थान की जनता ने 2016 में मुझे सर्वश्रेष्ठ विधायक का दर्जा दिलाया। नागौर सांसद हनुमान बेनीवाल पर पलटवार करते हुए डोटासरा बोले- खींवसर में नशे की प्रवृत्ति बढ़ रही है।

युवा पीढ़ी में नशा खत्म करने के लिए बेनीवाल को प्रयास करना चाहिए। बेनीवाल हमारे इंडिया गठबंधन के साथी है, इसलिए मैं उन पर किसी प्रकार की बात नहीं करूंगा।

बेनीवाल को चार-पांच बार खींवसर की जनता ने जिताया और नागौर की जनता ने दो बार एमपी बनाया, चाहे वह बीजेपी या कांग्रेस के समर्थन से बने हो। उनको वहां पर नशा मुक्ति का अभियान चलाकर युवा पीढ़ी को नशे से बचाना चाहिए। यह काम बेनीवाल की प्राथमिकता में होना चाहिए। डोटासरा ने कहा- अगर मैं यहां होता तो उनका (हनुमान बेनीवाल) का स्वागत करता।

बेनीवाल ने उठाया था सवाल

नागौर सांसद हनुमान बेनीवाल ने 6 मार्च को सीकर दौरे के दौरान कहा था कि डोटासरा का विधानसभा में स्पीकर के प्रति रवैया ठीक नहीं था। पार्टी के मझे हुए नेता इस तरह की गलत हरकत करते हैं तो एक गलत मैसेज जाता है। पहले तो काम कर दिया और फिर माफी मांगी ली। माफी एक बार नहीं, दो बार मांगी है, तो ऐसा करना नहीं चाहिए। अगर कर दिया तो माफी नहीं मांगनी चाहिए। इस पर डोटासरा ने पलटवार करते हुए ये बात कहीं।

बेनीवाल ने कहा था- अगर कांग्रेस ने मुझे नागौर में वोट दिए हैं तो 25 सीटों पर ऋक्क के किसान, मजदूर और युवाओं ने कांग्रेस को वोट दिए हैं। तब जाकर मरी हुई कांग्रेस का खाता राजस्थान में खुला है। कांग्रेस ने जैसे ही हमें दूर किया है, वैसे ही चार जगह जमानत जब्त हुई और 7 में 6 सीट हार गई। कांग्रेस पार्टी की 3 महीने में ही फूंक निकल गई।

सांसद ने कहा था कांग्रेस की 3 महीने में ही फूंक निकल गई

इंडिया अलायंस पर बेनीवाल ने कहा था- दिल्ली में मैं अभी भी अलायंस के अंदर हूं। कांग्रेस कोई भी मुद्दा लेकर आती है तो हम उसके साथ खड़े हैं, लेकिन हमारे मुद्दे को कांग्रेस देख नहीं रही है, यह अलग बात है। अभी स्टेट के अंदर कांग्रेस ने खुद ने ही अलायंस तोड़ा था, लेकिन मेरा कोई मूड नहीं था। बेनीवाल ने कहा था - अगर मैं दिल्ली में इंडिया अलायंस में हूं तो कांग्रेस की वजह से नहीं हूं। अगर कांग्रेस पार्टी ने मुझे वोट दिए तो कांग्रेस का भी जीरो से 11 का आंकड़ा आ गया। सीकर में सांसद अमराराम को आरएलपी ने 1 लाख वोट डाले हैं।

डोटासरा ने कलेक्ट्रेट तक निकाली रैली

डोटासरा शुक्रवार को नरोदड़ा, मानासी और लक्ष्मणगढ़ ग्रामीण को नगरपालिका में शामिल करने के विरोध में ग्रामीणों की ओर से किए जा रहे विरोध-प्रदर्शन में शामिल हुए थे। लोगों के साथ डोटासरा ने डाक बंगला से लेकर कलेक्ट्रेट तक पैदल आक्रोश रैली निकाली।

स्वत्वाधिकारी, मुद्रक, प्रकाशक श्रीमती कमलेश विजयवर्गीय द्वारा बढ़ता राजस्थान प्रिंटिंग प्रेस,हमीदपुरा रोड खण्डवा,निवाई टोंक (राज.) से मुद्रित एवं राजकीय महाविद्यालय के पास एन एच-12,बाईपास निवाई टोंक (राज.) से प्रकाशित, संपादक-तनुजा पठान*।
प्रधान संपादक-राम बिलास विजयवर्गीय मो.नं. 9414242258, 9214048888 टोंक कार्यालय मो.नं. 9414823448 प्रधान कार्यालय :185/ 116 ''प्रतीक्षा'' सेक्टर-18, प्रताप नगर सांगानेर, जयपुर (राज.) फोन नं.0141-2796794,2796795,
E-Mail-badhatarajasthan@yahoo.com, *पीआरबी एक्ट के तहत समाचार चयन के लिए जिम्मेदार (सभी विवादों का न्याय क्षेत्र जयपुर महानगर होगा)